Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ भाषाटीकासहिता

शुक्लयजुर्वेदीय (षडङ्ग) रुद्राष्टाध्यायी

प्रारभ्यते ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अद्यपूर्वोच्चारितएवंगुणाविशेषणविशिष्टा
यां शुभपुण्यतिथौममआत्मनः सकलशास्त्रश्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफल
प्राप्त्यर्थम् अमुककामनासिद्ध्यर्थम् अमुकद्रव्येण श्रीभवानीशंकरदे
वताप्रीत्यर्थम् अमुकरुद्राभिषेकमहंकरिष्ये ॥ तदङ्गतयाविहितान्शरी
रशुद्ध्यर्थम् लघुषडङ्गन्यासांश्चकरिष्ये॥मनोजूतिरितिमंत्रस्यबृहस्प
तिर्ऋषिः ॥ बृहस्पतिर्देवता बृहतीछन्दः हृदयन्यासे जपेविनियोगः ॥
ॐमनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तंनोत्त्वारिष्टंयज्ञ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ठं॒ सामि॒मन्द॑धातु ॥ विश्वे॑देवास॑ऽइ॒हमा॑दयन्ता॒मो३॒म्प्रति॑ष्ठ ॥ ओं हृद
यायनमः ॥ १ ॥ अबोध्यग्निरितिमन्त्रस्यबुधगविष्ठिरऽऋषिः अग्निर्देव
तात्रिष्टुप्छन्दः शिरोन्यासेजपेविनियोगः ॥ ॐ अबो॑ध्यु॒ग्निः स॒मिधा॒ज
नाना॒म्प्रति॑धे॒नुमि॑वाय॒ती मु॒षास॑म् ॥ य॒ह्वाऽइ॑व॒प्प्रव॒यामु॒ज्जिहा॑नाः॒प्प्रभा
नवं॑÷ सिस्रते॒नाकु॒मच्छं॑ ॥ ॐ शिरसेस्वाहा ॥ २ ॥ मूर्द्धानमितिमन्त्रस्य
भरद्वाजऋषिःअग्निर्देवतात्रिष्टुप्छन्दः ॥ शिखान्यासेजपेविनियोगः ॥
ॐमू॒र्द्धानं॑न्दि॒वोऽअ॑र॒तिम्पृ॑थि॒व्या वै॑श्वान॒रमृ॒तऽआजा॒तमु॒ग्निम् ॥ क॒वि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

६सुम्म्राजुमतिंथिञ्जनांनामुासन्नापात्रंजनयन्तदुेवाः ॥ ॐ शिखायैव
षट्॥ ३॥मर्म्माणितइतिमन्त्रस्य अप्रातिरथऋषिः मर्म्माणिदेवता ॥ विरा
ट्छन्दःकवचन्यासेजपेविनियोगः॥ॐ मर्म्माणितेवर्म्मणाछादयामि
सोमंस्त्वाराजामृतेनानुंवस्ताम्म ॥ उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयंन्त
न्त्वानुंदेवामंदन्तु॥ ॐ कवचायहुम्म ॥ ४॥ विश्वतश्चक्षुरितिमन्त्रस्य
विश्वकर्म्माभौवनऋषिः विश्वकर्म्मादेवतात्रिष्टुप्छन्दः नेत्रन्यासेजपेवि
नियोगः ॐ व्विश्वतंश्चक्षुरुतव्विश्वतोमुखोव्विश्वतोबाहुरुतव्विश्वतं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रूपात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमंतिसम्पतंत्रैर्द्यावाभूमींजनयंन्देवऽएकः ॥
ॐ नेत्रत्रयायवौषट् ॥ ५ ॥ मानस्तोकइतिमन्त्रस्यपरमेष्ठीऋषिः एक
रुद्रोदेवता जगतीछन्दः अस्त्रन्यासेजपेविनियोगः ॥ ॐमानंस्तोकेतनं
येमानऽआयुंषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मावोंवीरान्रुद्रभा
मिनोंवधीर्हविष्मंन्तःसदमित्वांहवामहे ॥ ॐ अस्त्रायफट् ॥ ६ ॥ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ हे हमारे परमधन ! गणेशजी ! ! आप संपूर्ण गणोंके स्वामी हैं, आपका हम आ-
वाहन करते हैं । हे भगवन् ! आपने तारकासुर आदि दैत्योंको मारकर देवताओंका परम उपकार किया
था अत एव आप समस्त विघ्नोंका नाश करनेमें समर्थ हैं आपको हम बुलाते हैं । प्रियाओंके प्रियपति,
धन आदिकोंमें अनन्त फल देनेवाली जो अणिमादिक सिद्धियें तिनके अधिपति आपको हम बुलाते

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे
प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवा
महे वसो मम ॥ आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥ १ ॥

हैं । हे गणराज ! आपने मुझे माताके गर्भद्वारा उत्पन्न किया है और हे अनादि ! आप गर्भसे उत्पन्न नहीं
हुए अर्थात् मैं तौ गर्भद्वारा पराधीनतासे उत्पन्न हुआ जीव हूं और आप गर्भादिरहित स्वाधीनतासे
उत्पन्न हुए परमेश्वर हैं इस कारण आप सबके स्वामी और सम्पूर्ण संसारको बनानेमें समर्थ हैं ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे ईश्वर ! गायत्री, त्रिष्टुप्, जगती, अनुष्टुप्, पंक्ति, बृहती, उष्णिक् और ककुप् छन्दोंद्वारा स्तुतियोंसे आपकी स्तुति प्रार्थना करते हैं ॥ २ ॥ हे सर्वव्यापक ! द्विपद, त्रिपद, चतुष्पद, षट्पद, विच्छन्द

गायत्रीत्रिष्टुब्जगंत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह ॥ बृहत्युष्णिहांककुप्सूचीभिःशम्यन्तुत्वा ॥ २ ॥ द्विपंदायाश्चतुंष्पदास्त्रिपंदायाश्चषट्पंदाः ॥ विच्छंन्दायाश्चसच्छंन्दाःसूचीभिःशम्यन्तुत्वा ॥ ३ ॥

और स्वच्छन्द जे छन्द हैं वे सुन्दर उक्तियोंसे आपकी स्तुति करते हैं अर्थात् उपरोक्त छन्दोंकरके हम आपकी स्तुति करते हैं ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे भगवन् ! स्तोम नामक वेदमन्त्रोंसे छन्दोंसहित प्रमाणयुक्त श्रुतिधर्मके जाननेवाले दिव्यज्ञानी सप्तर्षि-योंने आपके दिखाये हुए सनातन धर्मको देखकर आपकी प्राप्ति करी है, जिस प्रकारसे कि सारथी घो-

सहस्तोमाः सहछन्दसऽआवृतः सहप्रमाऽऋषयः सप्तदैव्याः ॥
पूर्वेषां पन्थामनुदृश्य धीराऽअन्वालेभिरे रथ्यो न रश्मीन् ॥४॥
यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति ॥ दूरङ्गमञ्ज्योति
षाञ्ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ५ ॥

ड़ोंकी रस्सी ग्रहण करके यथेष्ट स्थानको प्राप्त हो जाता है॥४॥ हे परमात्मन् ! जाग्रतअवस्थामें पुरुषका

१गौतमोऽत्रिर्भरद्वाजो जमदग्निस्तु कश्यपः । विश्वामित्रो वसिष्ठश्च महापुण्या अरुन्धती ॥ श्रीतारानाथतर्कवाचस्पतिभट्टाचा-र्यने और सुखानन्दनाथने मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, अंगिरा, वसिष्ठ ये सात ऋषि माने हैं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो मन दूर अथवा कष्टविधायक संसारको उत्कर्षतासे प्राप्त करता है, सोते हुए पुरुषका वोही मन उसी प्रकार सूक्ष्म भोगमय संसारको प्राप्त करता है, वोह जगत्‌में व्याप्त प्रकाश करनेवाला श्रोत्र (कर्ण) आदि इन्द्रियोंका प्रवर्त्तक मेरा मन कल्याण करनेवाले दोनों प्रकारके धर्मविषयक संकल्पवाला शान्तसंकल्प हो ॥ ५ ॥ हे भगवन् ! कर्मनिष्ठावाला होनेसे कर्मरूप बुद्धिमान् महात्मा ज्ञानी पुरुष

येन॒कर्म्मा॑ण्य॒पसो॑मनी॒षिणो॑य॒ज्ञेकृ॒ण्वन्ति॑वि॒दथे॑षु॒धीराः॑॥ यद॑

पू॒र्वंय॒क्षम॒न्तःप्र॒जाना॒न्तन्मे॒मनः॑शि॒वस॑ङ्क॒ल्पम॑स्तु ॥ ६ ॥

यज्ञमें जिस मनके द्वारा कर्मोंको करते हैं, प्रजाओंके मध्य योगियोंमें जो मन अद्भुत आत्मगूढ़ माना जाता है, आपकी कृपासे वोही मेरा मन कल्याणकारी इस लोक और परलोकमें धर्मविषयक सत्यसंकलपवाला शान्तसंकलपवाला हो ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे ईश्वर ! प्रजाओंमें जो मन तीव्र ज्ञानस्वरूप है, जो मन चित्त और धैर्यस्वरूप है, जो मन आत्माके संसर्गसे अविनाशी ज्योतिःस्वरूप है, जिस मनके विना कोई कार्य नहीं हो सक्ता वोह मेरा मन आपकी

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ॥ य
स्मान्नऽऋते किञ्चन कर्म्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पम
स्तु ॥७॥ येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्व्वम् ॥
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ८ ॥

कृपासे कल्याणकारी उभयविधि धर्मविषयक सत्यसंकल्पवाला हो॥ ७ ॥ हे ब्रह्मन् ! जिस आत्माके साथी मनके द्वारा यह संपूर्ण बीते हुए कालसम्बन्धी वस्तु, वर्त्तमानकालसंबंधी जो वस्तु और भविष्यकाल-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सम्बन्धी जो वस्तु सब प्रकारसे जानी जाती हैं । जिस मनके द्वारा सात होताओंवाला यज्ञ सम्पादन किया जाता है वोह मेरा मन श्रेष्ठ संकलपवाला हो ॥ ८ ॥ हे सच्चिदानन्द ! जिस मनमें मंत्रसहित ऋग्वेद प्रतिष्ठित है, जिस मनमें साम और यजुर्वेदके मंत्र प्रतिष्ठित हैं, जिस प्रकार रथके पहियोंकी धुरीमें अरे

यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवा
राः ॥ यस्मिँश्चित्तꣳ सर्वमोतम्प्रजानान्तन्मे मनः शिवस
ङ्कल्पमस्तु ॥ ९ ॥

लगे होते हैं तथा जिस मनमें प्रजाओंका सब ज्ञान स्थित है वह मेरा मन उभयविधि कल्याण करनेवाले श्रेष्ठ संकलपवाला शान्तसंकल्प हो ॥ ९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे व्यापक ! जिस प्रकारसे कि चतुर सारथी रस्सीके द्वारा वेगवाले घोडोंको इधर उधर ले जाता है इसी प्रकारसे जो मन प्राणियोंको इधर उधर ले जाता है तथा जो मन बाल्य युवा वृद्धावस्था जरारहित अतिशीघ्र गति हृदयमें विद्यमान है वह मेरा मन कल्याणकारी उभयविध धर्मविषयक संकल्पवाला

सुषारुथिरश्श्वांनिवुयन्नमंनुष्ष्यान्नेनुीयतेभीशुंभिर्व्वाजिनंऽइव॥
हृत्प्रतिष्ठुंय्यदंजिरञ्जविष्ठन्तन्न्मेमनंःशिवसंङ्कल्प्पमस्तु॥ १०॥
इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः॥ १॥हरिःॐसुहस्रंशीर्षापुरुषःसहस्रा
क्षःसुहस्रंपात्॥सभूमिंर्ठसुर्व्वतंस्प्पृत्त्वात्त्यंतिष्ठद्दशांगुलम्॥ १॥

शान्तसंकल्प हो आप ऐसी कृपा कीजिये ॥ १० ॥ इति षडङ्गरुद्रीकी भाषामें पहला अध्याय समाप्त हुआ ॥ १ ॥ सम्पूर्ण ब्रह्मांडके जीवोंके देहरूपी पुरमें विराजने और व्यापक होनेसे वह सच्चिदानन्द

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनन्त शिर अनन्त हाथ और अनन्त पगवाला है वह व्यष्टिसमष्टिरूप स्थान तिरछा ऊंचे व्याप्त करके नाभिसे दशाङ्गुल परमित हृदयस्थानको अतिक्रमण कर अन्तर्यामिरूपसे स्थित हुआ है ॥ १ ॥ जो कुछ कि यह भूत ब्रह्मसंकल्प जगत् है, जो भविष्य ब्रह्मसंकल्प जगत् है और जो वर्त्तमानमें यह जगत् बीज वा अन्न परिणामवीर्यसे नर पशु वृक्षादि रूपसे प्रकट होता है वह यह सब मुक्तिका स्वामी ब्रह्मही

पुरु॑षऽए॒वेद॒ꣳ सर्वं॒ यद्भू॒तं यच्च॒ भाव्य॑म् ॥ उ॒ताम॑ृत॒त्वस्येशा॑नो॒ यदन्ने॑नाति॒रोह॑ति ॥ २ ॥ ए॒तावा॑नस्य महि॒मातो॒ ज्याया॑ꣳश्च॒ पूरु॑षः ॥ पादो॑ऽस्य॒ विश्वा॑ भू॒तानि॑ त्रि॒पाद॑स्या॒मृतं॑ दि॒वि ॥ ३ ॥

है क्योंकि ब्रह्मसे उत्पन्न हुआ है उसका अन्य कोई नहीं है ॥ २ ॥ इस परब्रह्म परमात्माकी इतनीही महिमा है यह बात नहीं है किन्तु वह चिदात्मा ब्रह्म इस जगत्से कहीं (कई गुण) अधिक है इस कारण यह सब ब्रह्माण्ड उसका एक चौथाई है और सत्यलोकादिकोंमें इस चिदात्मा ब्रह्मका अविनाशी त्रिगुण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऐश्वर्य है इस कारण अनन्त ब्रह्महो अपनी ज्योतिद्वारा अपनेमें स्थित है ॥ ३ ॥ वह ईश्वर ब्रह्माण्डसे ऊर्ध्व उत्कर्षतापूर्वक स्थित हुआ फिर चतुर्थांश इस संसारमें स्थित हुआ, वही ब्रह्म सच्चिदानन्द मायामें प्रवेशके अनन्तर देवता तिर्यक् आदि रूपसे नानारूपवाला होकर इस चराचर जगत्को देख व्याप्त

त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ॥ ततो विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशुनेऽअभि ॥ ४ ॥ ततो विराडजायत विराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ५ ॥

करता हुआ ॥ ४ ॥ उस ब्रह्मसे विराट्की उत्पत्ति हुई, उस देहका अभिमानी पुरुष उसी देहको अधिकरण करके प्रगट हुआ, वही विराट् पुरुष सबमें श्रेष्ठ हुआ, पीछेसे पृथ्वीको उत्पन्न किया, इसके उपरान्त देवता मनुष्यादि अपनी अनन्त सामर्थ्यसे उसने उत्पन्न किये ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उसी ब्रह्मसे यज्ञ, दही मिला हुआ घी वा प्राण निष्पादित हुआ, उसी सच्चिदानन्दने अपनी अनन्त सामर्थ्यसे वायु वा प्राणरूप देवतावाले पशु उत्पन्न किये, हरिण आदिक वनोंमें रहनेवाले

तस्म्माँद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्म्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्रेव्वायुव्व्यानारण्ण्यान्ग्राम्म्याश्च्ये ॥ ६ ॥ तस्म्माँद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽ ऋचः सामांनिजज्ञिरे ॥ छन्दांꣳसिजज्ञिरेतस्म्माद्यजुस्तस्म्माँदजायत ॥ ७ ॥

और अश्व (घोडे) आदिक ग्रामवासी पशु वा कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय उसी परमात्माने निर्मित करीं ॥ ६ ॥ उसी सम्पूर्णके लयस्थान नारायणसे ऋग्वेद और सामवेद उत्पन्न हुए, उसीसे सब छंन्द[1] हुए और उसीसे यजुर्वेद प्रगट हुआ ॥ ७ ॥ ॥ ७ ॥

१ छन्दहीके कहनेसे अथर्ववेदभी आ गया ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उसी ब्रह्मसे घोडे और दूसरे पशु जो नीचे ऊपरके दांतोंवाले हैं उत्पन्न हुए उसी परमेश्वरसे गाय, बैल, भेड, बकरी उत्पन्न हुई हैं ॥ ८ ॥ जो साध्यादि देवता और ऋषि हैं उन्होंने उस सृष्टिसे प्रथम प्रगट हुए

तस्म्मादश्वांऽअजायन्तुयेकेचोभुयादंतः ॥ गावोहजज्ञिरेत स्म्मात्तस्मांज्जाताऽअंजावयंः ॥ ८ ॥ तंय्यज्ञम्बुर्हिषिप्प्रौक्षुन्न्पु रुषञ्ज्ञातमंग्ग्रुतः ॥ तेनंदेवाऽअंयजन्तसाद्ध्याऽऋषंयश्श्चये ॥ ॥ ९ ॥ यत्पुरुषंव्यदंधुःकतिधाव्यंकल्प्पयन् ॥ मुखङ्किमंस्यासी त्किम्बाहूकिमूरूपादांऽउच्च्येते ॥ १० ॥ यज्ञके साधनभूत विराट्पुरुषको कुशा-

द्वारा प्रोक्षण किया अथवा आत्मामें जाना और उसी ब्रह्मके द्वारा यज्ञ करते हुए ॥ ९ ॥ जिस विराट् पुरु-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षका विधान किया गया उसकी कितने प्रकार कल्पना करी गई, इस पुरुषका मुख कौन हुआ, बाहू कौन हुए, जंघा कौन हुए और चरण कौन हुए ॥ १० ॥ मुखसे उत्पन्न होनेके कारण ब्राह्मण इस पुरुषका मुख, क्षत्रिय बाहू, जंघासे उत्पन्न होनेके कारण वैश्य जंघा और चरणोंसे उत्पन्न होनेसे शूद्र

ब्राह्मणोऽस्यमुखंमासीद्बाहूराजन्यः कृतः ॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याᳫंशूद्रोऽअजायत ॥ ११ ॥ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥

उसके चरण हुए ॥ ११ ॥ उस पुरुषके मनसे चन्द्रमा उत्पन्न हुआ और नेत्रोंसे सूर्य और कर्णसे वायु और प्राण, मुखसे अग्नि उत्पन्न हुई अर्थात् वही सर्वरूप व्यापक ब्रह्मांडभरमें विद्यमान है ॥ १२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उसके नाभिस्थानसे अन्तरिक्ष हुआ इस कारण अन्तरिक्ष उसकी नाभि कही जाती है और उसके शिरसे स्वर्ग, चरणोंसे पृथ्वी, श्रोत्रसे दिशा उत्पन्न हुईं, जिस जिससे जो जो उत्पन्न हुए उसी उसीसे उस पुरुषके शरीरकी कल्पना करी गई ॥ १३ ॥ जब देवताओंने विराट् देहरूप हविद्वारा यज्ञको निर्माण किया तब

नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳशीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽअकल्पयन् ॥ १३ ॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ॥ वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ॥ १४ ॥

इस ज्ञानयज्ञ जो कि आत्मामेंही किया जाता है उसका वसन्तऋतु घृत हुआ, ग्रीष्म ऋतु समिधा, शरदऋतु हवि हुई अर्थात् इस विराट्रूप जगत्में वसन्तरूपी घी, ग्रीष्मरूपी समिधा, शरदरूपी हवि क्रम क्रमसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पडती रहती हैं जिससे यह यज्ञ निरन्तर होता रहता है ॥ यह मन्त्र सारे जगत्‌की गति वर्णन करता है ॥ १४ ॥ जब देवताओंने इस यज्ञको करते समय विराट्‌रूप पशुको भावित किया तब गायत्री आदि सात छन्द वा सप्तसागर इस यज्ञकी परिधि हुए। बारह महीने, पांच ऋतु, तीनों लोक, सूर्य अथवा

सप्तास्यांसन्परिधयस्त्रिःसप्तसमिधंःकृताः ॥ देवायद्यज्ञन्तन्वानाऽअबंध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥ १५ ॥

गायत्री आदि सात अतिजगति आदि सात और कृति आदि सब छन्द इस यज्ञकी समिधा हुए, अर्थात् सम्पूर्ण अंडकटाहमें कालरूपी चक्रके द्वारा मासादिकोंकी समिधा जलती रहती हैं आत्मामें छन्द समाप्त होते रहते हैं ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवता ज्ञानियोंने इस यज्ञके द्वारा सच्चिदानन्द ब्रह्मका पूजन किया (इस जगत्का कर्त्ता जानकर ज्ञानद्वारा प्राप्ति करी) जिस विधानसे पूजन करा वेही ईश्वर पूजन सम्बन्धी धर्म मुख्य हुए। जिस स्वर्गलोकमें पूर्व साध्यादि देवता रहते हैं उस जरामरणके दुःखोंसे रहित अविनाशी लोकको उस

यज्ञेनंयज्ञमंयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन्॥ तेह
नाकम्महिमानंःसचन्तुयत्रपूर्वेसाध्याःसन्तिदेवाः ॥ १६ ॥
अद्भ्यःसम्भृतःपृथिव्यैरसाच्चविश्वकर्म्मणःसमवर्त्तताग्रे ॥
तस्यत्वष्टाविदधद्रूपमेतितन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानमग्रे॥ १७॥

ईश्वरके सद्भक्तोंने प्राप्त किया ॥ १६ ॥ प्रथम परमेश्वर जिसका नाम विश्वकर्मा है वह वर्त्तमान था फिर उसी परमेश्वरने जिसका नाम त्वष्टा है रूपको धारण किया तब रसवाला जल हुआ जलसे पृथ्वी हुई,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पृथ्वीमें मनुष्य हुआ जो सब जीवमात्रमें श्रेष्ठ है ॥ १७ ॥ वेद कहता है कि मैं इस सूर्यसमान कान्ति-
वाले अविद्यासे शून्य ज्ञानस्वरूप महान् ब्रह्मको जानता हूं कि वह जैसा है और उसीको जानकर
मृत्युको अतिक्रमण कर अमृतकी प्राप्ति होती है उसके सिवाय आश्रयके निमित्त दूसरा मार्ग नहीं

वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात् ॥ तमेव
विदित्वातिमृत्युमेतिनान्यः पन्थाविद्यतेऽयनाय ॥ १८ ॥ प्रजा
पतिश्चरतिगर्ब्भेऽअन्तरजायमानोबहुधाविजायते ॥ तस्ययो
निम्परिपश्यन्तिधीरास्तस्मिन्हतस्थुर्ब्भुवनानिविश्श्वा ॥ १९ ॥

है ॥ १८ ॥ वोही प्रजापति गर्भमेंभी प्राप्त होता है और जन्म लेता हुआसा मनुष्य पशु तिर्यगादि योनि-
योंमें अनेक प्रकारका प्रतीत होता है ज्ञानी महात्मा उसके उत्पत्तिकारण ब्रह्मको सब ओरसे देखते हैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अर्थात् यह सब कुछ ब्रह्मस्वरूप है ऐसा जानते हैं क्योंकि उसीमें यह सब ब्रह्माण्ड स्थित है ॥ १९ ॥
जो ईश्वर सूर्य चन्द्रमादिकोंको प्रकाश देता है जो देवताओंका प्रथम पूज्य वा हितकारी है उस ब्रह्मादि
देवताओंसे पहले विद्यमान ब्रह्मज्योतिके लिये नमस्कार है ॥२०॥ सृष्टिके आरम्भमें विद्वानोंने उस सच्चि-

यो देवेभ्य॑ऽआतपति॒ यो दे॒वानां॑म्पु॒रोहि॑तः ॥
पूर्वो॒ यो दे॒वेभ्यो॑ जा॒तो नमो॑ रु॒चाय॒ ब्राह्म॑ये ॥ २० ॥
रुचम्ब्रा॒ह्मञ्ज॒नय॑न्तो दे॒वाऽअग्रे॒ तद॑ब्रुवन् ॥
यस्त्वै॒वम्ब्रा॑ह्म॒णो वि॒द्यात्तस्य॑ दे॒वाऽअ॑स॒न्वशे॑ ॥ २१ ॥

दानन्दब्रह्मज्योतिको ज्ञानगोचर कर कहा जो ज्ञानी ऋषि मुनि ब्रह्मज्ञानी इस ब्रह्मको पूर्वोक्त महिमासहित
जाने सम्पूर्ण देवता उस ब्रह्मनिष्ठके वशमें होते हैं अर्थात् वह उपासक जगत्पूज्य होता है ॥ २१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे ईश्वर ! श्री और लक्ष्मी आपकी पत्नीरूप हैं और ब्रह्माजीके रात दिन तुम्हारे दोनों पार्श्वस्वरूप हैं नक्षत्र आपका रूप है अश्विनीकुमार प्रकाशित मुख है, तुम स्वयंही हमें अपने आत्माके ज्ञानको प्राप्त

श्रीश्चतेलुक्ष्मीश्चुपत्न्यांवहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपम्
श्विनौव्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मंऽइषाणसर्व्वलोक
म्मंऽइषाण ॥ २२ ॥ इतिरुद्रेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

कराओ । इस अपने लोकको मुझ उपासकको प्राप्त कराओ यह सब कुछ भोग और ऐश्वर्य ज्ञान मुझे दीजिये ॥ २२ ॥ इति षडङ्गरुद्रीकी भाषामें दूसरा अध्याय समाप्त हुआ ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इन्द्र जो वज्रको तीक्ष्ण करनेवाला है, व्यापक है, वृषभकी नांई भयंकर है, शत्रुओंका घातक है, मनुष्योंका क्षोभ करनेवाला है, जिसका शब्द शत्रुओंको भयदायक है, जिसके पलक नहीं लगते वोह एकही वीर सैंकडों शत्रुओंकी सेनाको जीतता है ॥ १ ॥

हरिः ॐ आशुःशिशांनोवृषभोनभीमोघंनाघनःक्षोभंणश्चर्षणीनाम् ॥ संक्रन्दंनोऽनिमिषऽएंकवीरःशतᳪसेनांऽअजयत्साकमिन्द्रंः ॥ १ ॥ सङ्क्रन्दंनेनानिमिषेणंजिष्णुनांयुत्कारेणंदुश्च्यवनेनंधृष्णुनां ॥ तदिन्द्रेंणजयततत्संहध्वंयुधोंनरऽइषुंहस्तेनवृष्णां ॥ २ ॥

हे वीर मनुष्यो ! तुम भयरहित पापात्मा मनुष्योंको दुःख देनेवाले और भक्तोंको अपनी आत्मामें युक्त करनेवाले जगदीश्वर तथा बाण हाथमें धारण करनेवाले जयशील मनुष्य तथा अजेय भगवान् विष्णु

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

तथा वर्षा करनेवाले सूर्यरूप ईश्वरके द्वारा उस शत्रुसेनाको जीतो । उसे मारो अथवा हे ईश्वर! ऐसा हो कि हम आपकी कृपासे कामादिक शत्रुओंकी सेनाको जीतें ॥ २ ॥ वह स्वतंत्र इन्द्ररूपी ईश्वर धनुषबाणधारी अनेक अवतारोंसे युद्धके निमित्त संसर्ग करनेवाला; दैत्योंके समूहके साथ युद्ध करनेवाला,

सऽइषुंहस्तैःसनिंषङ्गिभिर्वृशीसꣳस्रंष्टासयुधऽइन्द्रोंगुणेनं ॥ सु
ꣳसृष्टजित्त्सोमपाबाहुशर्द्धर्युग्रधन्वाप्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥
बृहस्पतेपरिंदीयारथेनरक्षोहामित्राँ२ऽअपबाधमानः ॥ प्रभ
ञ्जन्त्सेनाःप्रमृणोयुधाजयन्नस्माकमेद्ध्यविताख्थानाम् ॥ ४ ॥

युद्ध करनेवालोंको जीतनेवाला, सोमपान करनेवाला, बाहुबलसे युक्त, उग्र धनुषधारी, बाणोंका चलानेवाला है ॥ ३ ॥ हे देवताओंके पुरोहित बृहस्पति! राक्षसोंके मारनेवाले तुम रथद्वारा सब ओर जाओ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शत्रुओंको दुःख देते, उन शत्रुओंकी सेनाओंको तोडते, युद्धसे मारनेवालोंको जीतते आप हमारे रथियोंके रक्षक हूजिये ॥ ४ ॥ हे इन्द्र ! तुम शत्रुओंके बलको जानते हो, सबको उपदेश करनेवाले हो, शूरवीर बलिष्ठ अन्नसम्पत्तिसे युक्त युद्धमें क्रूरतायुक्त सब ओर वीरोंसे सेवित, सेवकोंसे युक्त, ब्रह्मज्योतिसे प्रकट

बलविज्ञायस्थविरःप्रवीरःसहस्वान्वाजीसहमानऽउग्रः ॥ अ
भिवीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्रमिन्द्ररथमातिष्ठगोवित् ॥ ५ ॥
गोत्रभिदंगोविदंवज्रबाहुंजयन्तमज्मप्रमृणन्तमोजसा ॥ इ
मꣳसजाताअनुवीरयध्वमिन्द्रꣳसखायोऽअनुसꣳरभध्वम् ॥६॥

हुए, वेदवचनोंके जाननेवाले, तुम शत्रुओंको सहते हुए जयशील रथपर चढो । गूढार्थ यह है कि जीव कामादि शत्रुओंको सहन करता जयशील योगरूपी रथपर चढो ॥ ५ ॥ जिनका जन्म समान है ऐसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवता इस राक्षसकुलके नाश करनेवाले, वेदवचनोंको जाननेवाले, वज्रको धारण करनेवाले, संग्रामोंको जीतनेवाले, बलसे शत्रुओंको मारनेवाले, इन्द्रको वीरकर्मका उत्साह दिलाओ और वेग करनेवालेके पीछे वेग करो ॥ ६ ॥ दया[१]करके रहित, महापराक्रमी क्रोध अथवा सौ (१००) यज्ञका करनेवाले

अभिगोत्राणिसहंसागाहंमानोदयोवीरः शतमंन्युरिन्द्रः ॥ दु

श्च्यवनः पृंतनाषाडंयुद्ध्योस्माकर्ठंसेनाऽअवतुप्रयुत्सु॥७॥

जिसको कोई न जीत सके, जो संग्राममें जीतनेवाला है, जिससे कोई संग्राम नहीं कर सक्ता ऐसे देवताओंके अधिपति इन्द्र संग्राममें राक्षसोंके कुलोंको एकसाथ सब ओर तित्तर वित्तर करते हुए हमारी सेनाओंकी रक्षा करो ॥ ७ ॥

१ इस जगह ‘ दयाकरके रहित ’ इस पदसे शत्रुओंके ऊपर निर्दय समझना, वास्तविक इन्द्र दयावान् हैं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बृहस्पति और इन्द्र इन शत्रुओंकी मर्दन करनेवाली जयशील देवताओंकी सेनाके सेनापति होंय, उनके आगे यज्ञ सोम और दक्षिण प्राप्त हों मरुद्गण सेनाके आगे २ गमन करे ॥ ८ ॥ हमारी रक्षा करनेके निमित्त संग्राममें स्थिरचित्त संसारके गिरानेमें समर्थ जीतनेवाले बारह आदित्य नामक

इन्द्रँऽआसान्नेताबृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञःपुरऽएतुसोमः ॥ देवसे
नानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्रम् ॥ ८ ॥ इन्द्र
स्यवृष्णोव्वरुणस्यराज्ञऽआदित्यानाम्मरुताᳬशर्द्धऽउग्रम् ॥
महामनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जयतामुदस्थात् ॥ ९ ॥

देवताओं मरुद्गणों और कामनाकी वर्षा करनेवाले इन्द्र और राजा वरुणकी भयंकर सेना और उसका जयशब्द प्रकट हुआ ॥ ९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे इन्द्र ! तुम शस्त्रोंको हर्षित करो अर्थात् सजाओ, हमारे मनुष्योंके मनको प्रसन्न करो, शत्रुओंके मारनेवाले घोडोंकी शीघ्र गतियोंको प्राप्त कराओ और ऐसा हो कि विजयमान रथोंके शब्द प्रकट

उद्धर्षयमघवन्नायुधान्युत्सत्त्वनाम्मामकानाम्मनाᳬंसि ॥ उद्
वृत्रहन्वाजिनांव्वाजिनान्युद्रथानाञ्जयतांय्यन्तुघोषाः ॥ १० ॥
अस्माकमिन्द्रःसमृतेषुध्वजेष्वस्माकंयाऽइषवस्ताजयन्तु ॥
अस्माकंव्वीराऽउत्तरेभवन्त्वस्माँ२ऽउदेवाऽअवताहवेषु ॥ ११ ॥

हों ॥ १० ॥ ध्वजाओंसे ध्वजा मिलनेपर इन्द्र हमारी सेनाओंकी रक्षा करो, हमारे बाण शत्रुओंकी सेनाको जीतो हमारे वीर शत्रुओंके वीरोंसे श्रेष्ठ हों । हे देवताओ तुम युद्धमें हमारी रक्षा करो ॥ ११ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे प्राप्तियोग देवसेना ! तुम शत्रुओंके चित्तको मोहित करतीं और उनके अंगोंको पकडतीं चलो सब प्रकार शत्रुओंको पकडनेको चलो, उनके हृदयोंको शोकोंसे दग्ध करो, हमारे शत्रु गहरे अन्धकारसे व्याप्त

अमीषांश्चित्तम्प्रतिलोभयंन्तीगृहाणाङ्गांन्यप्स्वे परेहि॥ अभि
प्रेहिनिर्द्दहहृत्सुशोकैरन्धेनामित्रास्तमंसासचन्ताम्॥ १२॥
अवंसृष्टापरापतशरंव्येब्रह्मंसर्ठशिते ॥ गच्छामित्रान्प्रपंद्य
स्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः॥ १३॥

होंय॥१२॥ हे वैदिकमंत्रोंसे तीक्ष्ण करे हुए बाणरूपी अस्त्र ! हमसे छोडे हुए तुम हमारे वैरियोंकी सेनापर गिरो, शत्रुओंको प्राप्त करो, उनके शरीरोंमें प्रवेश करो, किसीभी हमारे वैरीको बांकी मत छोडो॥१३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे हमारे योधाओ ! तुम सब ओरसे शत्रुओंकी सेनाओंमें जाओ, सब प्रकारसे विजय पाओ, परमेश्वर तुम्हें विजयका सुख दे, तुम्हारे भुजदंड शस्त्र उठानेवाले हों, जिस प्रकार तुम सब स्थानोंमें जय प्राप्त करनेवाले हो ॥ १४ ॥ हे मरुद्गणो ! जो यह वैरियोंकी सेना बलसे ईर्षा करती हुई हमारे सब ओरसे

प्रेताजयंतानरऽइन्द्रोवुः शर्म्मयच्छतु ॥ उग्रावंः सन्तुबाहवो
नाधृष्ष्यायथासंथ ॥ १४॥ असौयासेनांमरुतुः परेषामुभ्यै
तिंनुऽओजंसास्प्पर्द्धमाना ॥ ताङ्गूहततमसापंव्रतेनुयथामी
ऽअन्योऽअन्न्यन्नजानन् ॥ १५॥

सन्मुख होती है सो तुम इस सेनाको कर्मरहित अन्धकारसे ढक दो जिस कारण यह सेना एक दूसरेको न पहिंचाने ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिस युद्धमें शत्रुओंके चलाये हुए बाण गिरते हैं जैसे फैली शिखावाले कुमार उस युद्धमें देवगुरु बृहस्प-
ति, देवताओंकी माता अदिति, देवताओंके स्वामी इन्द्र हमें विजयका सुख और आनन्द सदा दो॥१६॥

यत्रंबाणाः॑सुम्पतंन्तिकुमाराविंशिखाऽइव ॥ तन्नुऽइन्द्रोबृह
स्प्पतिरदिंतिः॒शर्म्मंयच्छतुविश्वाहाशर्म्मंयच्छतु ॥ १६ ॥
मर्म्माणितेवर्म्मंणाच्छादयामिसोमंस्त्वाराजामृतेनानुंवस्ता
म्‌ ॥ उरोर्व्वरींयोव्वरुंणस्तेकृणोतुजयंन्तन्त्वानुंदेवामंदन्तु ॥
॥ १७ ॥ इतिरुद्रेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

हे यजमान ! तेरे मर्मस्थानको कवचसे ढकता हूं ब्राह्मणोंका राजा सोम मृत्युसे रक्षा करनेवाले कवचके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वारा तुझे आच्छादन करो, वरुण तेरे कवचको बडेसे बडा करे, देवता विजय पानेवाले तुमको हर्षित वा उत्साहवान् करो ॥ १७ ॥ इति षडंगरुद्रीकी भाषामें तीसरा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ सूर्यरूपी परमात्मा जीवात्माके निमित्त अखण्ड आयुको स्थापन करता है बडे ज्ञानस्वरूप सोमको पान करो

हरिः ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविंहुतम्।
वातंजूतोयोऽअभिरक्षतित्मनाम्प्रजाः पुंपोषपुरुधाविराजति॥ १ ॥

जो समष्टि प्राणसे युक्त सूर्य अपने आत्मामें प्रजाको पालन करता है और पोषण करता है वही नाना-प्रकारके देवादिरूपसे विराजित होता है ॥ १ ॥

१ यह यजमानको ऋत्विक आशीर्वाद दे जब वह युद्धको दूसरेके देशपर चढाई करे । इस अध्यायमें वेदान्तमें इन्द्रसे ईश्वर यजमान स्तुति करनेवाला, जीव सहायक, शमदमादि सेना, कामक्रोधादि शत्रु जानने चाहिये ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूर्यकी किरणेंही उस ज्ञान वा धनके उत्पत्तिस्थान प्रकाशमान सूर्यरूप सोमकोही सम्पूर्णके दर्शनके निमित्त स्वर्गलोकमें पहुँचाती हैं उस सूर्यके अर्थ श्रेष्ठ हवन हो ॥ २ ॥ हे सूर्यरूप परमात्मन् ! पवित्र करनेवाले तुम जिस कृपादृष्टिसे जगत्को देखते हो उसी कृपादृष्टिसे आप हमें देखिये ॥ ३ ॥ हे परमा-

उदुत्यञ्जातवेदसन्देवंवहन्तिकेतवः ॥ दृशेविश्वायसूर्य्यम् ॥ ॥ २ ॥ येनापावकचक्षसाभुरण्यन्तञ्जनाँ२ अनु ॥ त्वंवरुणपश्यसि ॥ ३ ॥ दैव्यावध्वर्य्यूऽआगतँरथेनसूर्य्यत्वचा ॥ मध्वायज्ञँसमञ्जाथे ॥ तम्प्रत्नथायंवेनश्चित्रन्देवानाम् ॥ ४ ॥

त्मन् ! दिव्यगुणोंसे युक्त सूर्यकी सदृश प्रकाशवान् ब्रह्माण्डरूपी रथके द्वारा आप प्रकट हूजिये । ब्रह्मज्ञानसे योगरथको सींचिये अथवा दिव्यगुणसम्पन्न सूर्यवत्प्रकाशवान् विद्यारूपी रथपर सवार होकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो ज्ञानरूपी जो सोमपान किये हैं ऐसे विद्वानोंको आता देख सब उनकी प्रतिष्ठा करते हैं ॥ ४ ॥ इस सृष्टिसे प्रथम उत्पन्न हुए जो विद्वान् और देवता बडे गिने जाते हैं, जो आत्माके जाननेवाले हैं वे कुशासनपर बैठकर परमेश्वरकी उपसना करते हुए, जो देवता सनातनमार्गमें चलते और जिनमें सब श्रेष्ठता है

तम्प्रत्नथांपूर्व्वथांविश्वथेमथांज्ज्येष्ठतांतिम्बर्हिषदंᳬस्वर्व्विदम् ॥ प्रतीचीनंवृजनंदोहसेधुनिमाशुञ्जयन्तमनुयासुवर्द्धसे ॥ ५ ॥ अयंवेनश्चोदयत्पृश्निगर्ब्भाज्ज्योतिर्ज्जरायूरजसोविमाने। इममपाᳬसंगमेसूर्य्यस्यशिशुन्नविप्रामतिभीरिहन्ति ॥ ६ ॥

उन्ही गुणियोंसे ईश्वरने सृष्टिको उत्पन्न किया जिनसे यह सृष्टि वृद्धिको प्राप्त हुई ॥ ५ ॥ यही परमात्मा पापियोंको दण्ड देनेवाला पुण्यवान् सन्मार्गमें चलनेवालोंको पालनेहारे, ज्योतिःस्वरूप परमेश्वरने श-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क्तिहीन मनुष्योंको देख विमान आदिक रचनेकी बुद्धि दी । जो विमान जलके सङ्गम अर्थात् समुद्र और आकाशमें मेघोंकी नाईं चलते हैं जिनकी रोक कहीं नहीं होती ॥ ६ ॥ देवताओंके जीवन साधन ब्रह्मा विष्णु महेशादि रूप धारण करनेवाले परमेश्वरके चक्षु और चर अचरके आत्मा सूर्यने आश्चर्यवत्

चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्यव्वरुणस्याग्नेः ॥ आ
प्प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳसूर्य्यऽआत्माजगतस्तस्थुषश्च॥
॥७॥आनऽइडाभिर्व्विदथेसुशस्तिव्विश्वानरःसवितादेवऽएतु॥
अपियथायुवानोमत्सथानोव्विश्वञ्जगदभिपित्वेमनीषा ॥ ८ ॥

उदय किया उस सूर्य देवताके निमित्त श्रेष्ठ होम हो । हे सूर्यदेवता ! तुम पृथ्वी, स्वर्ग और अन्तरिक्षको जगत्की उपकार करनेवाली अपनी किरणोंसे पूर्ण करो ॥ ७ ॥ हे सब जीवोंके हितकारी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अन्तर्यामी ईश्वर ! हमारी श्रद्धाओंके द्वारा प्रशंसा योग्य यज्ञशाला वा हृदयाकाशमें प्रकट हो । इस प्रकार ईश्वरसे कहकर फिर देवताओंसे प्रार्थना करते हैं । हे देवताओ ! आनेके समय जिस प्रकार तुम तृप्त हो उसी प्रकार सब जगत्को हमारे मन, काम, क्षमा, लक्ष्मी और बुद्धिसे तृप्त करो ॥ ८ ॥ हे पाप-

यदुद्यकच्चंवृत्रहन्नुदगाँऽअभिसूर्य्य ॥ सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे ॥९॥
तुरणिर्व्विश्श्वदर्शतोज्ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ॥ व्विश्श्वमाभासि
रोचनम् ॥ १० ॥

नाशक ऐश्वर्ययुक्त अन्तर्यामी परमात्मन् ! योगयज्ञमें जहां कहीं आप उदय करते हो वह सब तुम्हारे वशमें हो ॥ ९ ॥ हे सूर्य ! संसारसागरके नौकारूप सबके दर्शनयोग तुम तेजके कर्त्ता हो आपके प्रकाशसे देदीप्यमान ब्रह्माण्डको तुम प्रकाश करते हो ॥ १० ॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूर्यका यही देवत्व अर्थात् ब्रह्माण्डमें क्रीडन है, वही ऐश्वर्य है जो विराट्रूप देहमें सब ओरसे विस्तार किये हुए अपने आत्माको प्रलयके समय योगमार्गसे अपहरण करता है, वही हरितवर्ण किरणोंको विराट्रूप देहसे अपने आत्मामें युक्त करता है इसके पश्चात् प्रलय सबके निमित्त अथवा स्वर्ग अन्तरिक्ष

तत्सूर्य्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्त्तोर्विततं सञ्जभार।

यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै ॥ ११ ॥

तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे ॥ अ

नन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥ १२ ॥

पृथ्वीके निमित्त वस्त्राच्छादन अर्थात् उसको नाश करता है ॥ ११ ॥ सूर्यही स्वर्गलोकके निकट पुण्यात्माओंके अनुग्राहक और पापात्माओंके निग्राहकरूपको करता है इस ब्रह्माण्डको अन्तर्यामी सर्वात्मा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

रुद्री ॥१९॥

रूपसे देखता है इस सूर्यका दूसरा रूप अनन्त अर्थात् परिच्छेदरहित उपाधिविहीन ब्रह्म है । इसीके साकार दूसरे रूपको इन्द्रियोंकी वृत्तियें अथवा किरणें धारण करती हैं अर्थात् सूर्यरूप परमेश्वर निर्गुण और सगुणरूप है ॥ १२ ॥ हे जगत्के प्रेरक ! सत्य है कि तुम श्रेष्ठ हो, सत्य है कि तुम महान् हो, भा०टी० अ० ४

बण्णमहाँ२ऽअसिसूर्य्युबडादित्यमहाँ२ऽअसि ॥ मुहस्तेसुतोमहिमा पंनस्यतेद्धादेवमुहाँ२ऽअसि ॥ १३ ॥ बट्सूर्य्युश्श्रवसामुहाँ२ऽअसि सुत्रादेवमुहाँ२ऽअसि ॥ मुह्नादेवानांमसुर्य्यः पुरोहितोविभुज्ज्योतिरदाँब्भ्यम् ॥ १४ ॥ सूर्यवत् प्रकाशवान् हो, तुम नित्य महान्की महिमा वेदोंसे गाई ॥१९॥

जाती है । हे दीप्यमान ! सत्य है कि तुम महान् हो ॥१३॥ हे सूर्यरूप परमेश्वर ! सत्य है कि तुम यश-रूपी धनसे महान् हो, तुम अनेक रूपसे क्रीडा कर प्राणियोंका हित करते हो, तुमही देवताओंका

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रथम हित करनेवाले हो, तुमही व्यापक, निग्रहानुग्रहमें समर्थ ज्योतिःस्वरूप हो, तुम लक्ष्मी ऐश्वर्यशक्तिके देनेवाले हो और महत्वसभी महान् हो ॥ १४ ॥ सूर्यरूपी परमात्माका पूजन करतेही उस इन्द्ररूपकी सब वृष्टि धान्यनिष्पत्ति आदिको भोगो और हम तेजके द्वारा सूर्यका उदय होनेपर यज्ञमें

श्रायन्तऽइवसूर्य्यंविश्वेदिन्द्रस्यभक्षत॥ वसूनिजातेजनमान
ऽओजसाप्प्रतिभागन्नदीधिम ॥ १५॥ अद्यादेवाऽउदितासूर्य्य
स्यानिरंहसःपिपृतानिरवद्यात् ॥ तन्नोमित्रोव्वरुणोमामह
न्तामदितिःसिन्धुःपृथिवीऽउतद्यौः ॥ १६ ॥

देवभागको दे अर्थात् वह परमात्मा सूर्यकी तरह जगत्को प्रकाशित करता, मेघोंकी नाईं पोषण करता, आठवसुओंकी तरह जन्म देता ऐसा परमेश्वर सबका उपास्य है ॥ १५ ॥ हे सूर्य ! रश्मिरूप देवताओं इस दिनमें सूर्योदय होनेपर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमको दुष्कृत कर्म और अपयशसे बचाओ । मित्र, वरुण, अदिति, समुद्र, पृथ्वी और स्वर्ग हमारे वचनको अङ्गीकार करो अर्थात् मित्र उपकार, वरुण मेघकी तरह पालन, महत्वदाता अदिति माताकी तरह पालन, सिन्धु रत्नोंका देनेवाला, पृथ्वी आधारकी देनेवाली, परमेश्वरकी कृपासे हो ॥ १६ ॥

सूर्यदेवता ज्योतिर्मय मंडलरूप निज रथके द्वारा सुमेरुपर्वतकी परिक्रमा करता अंधकार और ज्योतिसे

आकृष्णेनुरजंसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्यन् ॥ १७ ॥ इतिरुद्रेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

देवता और मनुष्यादिकोंको अपने अपने व्यापारमें स्थिर करता भुवनोंको देखता साधु असाधु कर्मोंको विचारता गति करता है स्वयं सर्वगत अचल और निर्विकार है ॥ १७ ॥ इति षडङ्गरुद्रीकी भाषामें चतुर्थ अध्याय समाप्त हुआ ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे रुद्र ! पापियोंको दंड देनेवाले और पापिजनोंके पापके ऊपर क्रोध करनेवाले आपको नमस्कार है और पापियोंके पापका नाश करनेको तीक्ष्ण बाणकी सदृश आपके अर्थ नमस्कार है । दोनों हाथोंको जोडकर बारंबार आपके अर्थ नमस्कार है ॥ १ ॥ हे पापियोंको दंड देनेवाले रुद्र ! और गिरिशन्त

हरिःॐनमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥ बाहुभ्यामुतते
नमः ॥ १ ॥ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी ॥ तयानस्त
न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ २ ॥

अर्थात् हे मनोहर कैलासपर्वतपर शयन करनेवाले ! कल्याण करनेवाला जो आपका मनोहर विस्तार है पापोंके दूर करनेको तीक्ष्ण शस्त्रका समान आप उसी अपने मनोरंजन विस्तार करके महापर्वतकी तुल्य सारे सुखोंसे पूर्ण उसी सुखको हम सम्पूर्ण प्राणियोंके अर्थ आप प्रकाशित कीजिये ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और हे निर्मल कैलासपर्वतके ऊपर शयन करनेवाले! जिस बाणको आप पापियोंके नाशके अर्थ धारण करते हैं। हे कैलासमें रहनेवाले! मनुष्योंकी रक्षा करनेवाले! उसी बाणको धारण कर सब जगत्की रक्षा करो और पाप और अधर्मादिकोंसे नष्ट होते हुए संसारकी तुम रक्षा करो ॥ ३ ॥

यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रता
ङ्कुरुमाहिꣳसीः पुरुषञ्जगत् ॥ ३ ॥ शिवेनवचसात्वा
गिरिशाच्छावदामसि ॥ यथानःसर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ
सुमनाऽअसत् ॥ ४ ॥

हे कैलासके ईश्वर! मैं कल्याणकी करनेवाली वाणियोंसे साक्षात् आपकी प्रार्थना करता हूं। सो वह यह प्रार्थना है कि जिससे हमारा मन निर्मल हो और यह संसार और हम सम्पूर्ण दोषोंसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

छूटकर शुद्ध गुणसम्पन्न हों ॥४॥ रक्तवर्णकी सदृश रजोगुणवाले, सम्पूर्ण जगत्को पालनेवाले, सुन्दर २ मङ्गल समाचारोंके करनेवाले जो यह परमेश्वर हैं जिन कल्याणकारक परमेश्वरकी सब दिशाओंमें

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ॥ अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वांश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव ॥ ५ ॥ असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः ॥ ये चैनꣳ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳ हेड ईमहे ॥ ६ ॥

सम्पूर्ण जगत्के बीचमें विद्वान् लोग निरन्तर प्रार्थना करते हैं वेही परमेश्वर सब प्राणिमात्रको उपासना करने योग्य हैं ॥ ५ ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो यह सर्वव्यापक सच्चिदानन्द परमेश्वर तमोगुणरूपी नीलवर्णसे व्याप्त हैं इसी कारण यह सर्व संसार नीलवर्णवाले तमोगुणसे युक्त है अतिही आनन्दकी बात है कि नीलवर्णसे आच्छादित होनेके कारण हम इस परमेश्वरको नहीं देख सक्ते (आश्चर्य यह है कि परमेश्वरको विना देखेभी इतनी अधिक प्रीति है)

असौयोऽवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोविलोहितः ॥ उतैनंगोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहाय्यः सदृष्टोमृडयातिनः ॥७॥ नमोस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे ॥ अथोयेऽअस्स्यसत्वानोहन्तेभ्योकरन्नमः ॥ ८ ॥

अपने प्रीतिपात्र उसी परमेश्वरसे रक्षित यह असार संसार उसी तेजस्वी परमेश्वरकी स्तुति करता है और वह परमेश्वर जिस प्रकार सब बातोंको देखते हुए संसारको पालते हैं उसी तरह हमाराभी पालन पोषण करें ॥ ७ ॥ समुद्रमंथनके समय महाहाला-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हल पान करनेसे नीला जिनका कण्ठ हो गया है ऐसे जगदाधार शिव (रुद्र) के अर्थ नमस्कार है । हजारों नेत्रोंवाले अर्थात् इन्द्रकी सदृश सेचन करनेवालेको नमस्कार है । सम्पूर्ण प्राणियोंके गमनके एकही कारणके अर्थ नमस्कार है । सारी सृष्टिके संहार करनेवालेके अर्थ नमस्कार है ॥ ८ ॥ हे सम्पूर्ण

प्रमुं॑ञ्च॒ धन्व॑न॒स्त्वमु॒भयो॒रार्त्न्यो॒र्ज्याम् ॥ याश्च॑ ते॒ हस्त॒ऽइष॑वः॒ परा॒ ता भ॑गवो वप ॥ ९ ॥ विज्यं॒ धनुः॑ कप॒र्दिनो॒ विश॑ल्यो॒ बाण॑वाँ२ऽउ॒त ॥ अने॑शन्न॒स्य या॒ऽइष॑व॒ऽआ॒भुर॑स्य निषङ्ग॒धिः ॥ १० ॥

ऐश्वर्ययुक्त रुद्र ! आप अपने इस धनुषकी दोनों प्रत्यंचा (धनुषके रोदे) ओंको दूर करिये और यह जो आपके पास बाण है इन बाणोंकोभी आप दूर फेंक दीजिये ॥ ९ ॥ कपार्दी अर्थात् जटाजूटवाले रुद्रका धनुष प्रत्यंचारहित होय और रुद्रके बाण भालरहित हों आपके बाण शून्य हों, रुद्रके खड्ग

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रखनेका कोष खड्गरहित हो अर्थात् रुद्रदेव हमारे प्रति कोई शस्त्र न चलावें ॥ १० ॥ हे भगवन्! आपके करकमलमें जो धनुष है और सबके पालन करनेकी शक्ति है उस अपने धनुष और अपनी शक्तिसे हमको और सारे संसारभरकी आप पालन करते रहिये । हे रुद्रदेव! यह आपसे हमारी प्रार्थना

यातें हेतिम्मींढुष्टमहस्तेंबभूवंतेधनुंः ॥ तयास्मान्विश्वतस्त्व मंयुक्ष्म्मयापरिंभुज ॥ ११ ॥ परिंतेधन्न्वंनोहेतिरस्म्मान्वृं णक्तुविश्वतंः॥ अथोयऽइंषुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधेंहितम्॥ १२॥

है ॥ ११ ॥ हे रुद्र! आपका धनुषसंबंधी शस्त्र अर्थात् बाण हमको छोडे अर्थात् हमारा नाश नहीं करे और आप अपनी भर्थरी (प्रत्यंचाको) हमसे दूरही स्थापित कीजिये ॥ १२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे असंख्यों नेत्रवाले और हे सैंकडों बाणोंके धारण करनेवाले रुद्र ! आप अपने धनुषको प्रत्यंचासे रहित और बाणोंको भालसे शून्य करके हमारे विषें शान्त स्वरूप सुंदर स्वभाववाले हूजिये अर्थात् निरन्तर हमारे ऊपर कृपादृष्टिसे रहिये ॥ १३ ॥ हे रुद्र ! धनुषमें विना चढाये हुए और धर्षण है शील जिसका

अवतत्यधनुष्ट्वँसहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्य्यशल्यानाम्मुखांशिवोनं÷सुमनांभव ॥ १३ ॥ नमस्तऽआयुधायानांततायधृष्णवे ॥ उभाभ्यामुततेनमोबाहुभ्यान्तवधन्वने ॥ १४ ॥

ऐसे अर्थात् शत्रुओंका नाश करनेवाले आपके बाणको नमस्कार है और आपकी भुजाओंको नमस्कार है और जिसकी प्रत्यंचा दूर कर दी है ऐसे आपके धनुषके अर्थ वारंवार नमस्कार है ॥ १४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे रुद्र ! आप हमारे वृद्धोंको मत मारिये तथा तुम हमारे बालकोंकाभी वध मत करो तथा हमारे माता पिताको मत मारो, हमारे सेचन करे हुए युवापुरुषोंको मत मारो और हमारे गर्भमें स्थित बालककी रक्षा करो तथा हमारी प्यारी स्त्रीको मत मारो तथा हमारे बेटे पोते आदिकोंको मत मारो अर्थात्

मानोंमुहान्तंमुतमानोंऽअर्भुकम्मानुऽउक्षंन्तमुतमानंऽउक्षितम् ॥
मानोंव्वधीःपितरम्मोतमातरम्मानंः प्प्रियास्तुन्न्वोरुद्ररीरिषः ॥
॥१५॥ मानंस्तोकेतनंयेमानुऽआयुंषिमानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरि
षः॥ मानोंव्वीरान्रुंद्रभामिनोंवधीर्हविष्मंन्तःसदमित्त्वांहवामहे १६

सबकी रक्षा करो ॥ १५ ॥ हे परमात्मन् रुद्र ! तुम हमारे पुत्रोंको हनन मत करो तथा पौत्रादिकोंको मत मारो तथा हमारे जीवनको मत हरो गौएं तथा घोडोंको मत मारो, क्रोध कर हमारे सेवकोंकी हिंसा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मत करो । हे स्वामिन् ! इनके मारनेमें आपका कोईभी उपकार नहीं है । हे रुद्रदेव ! हम तुमको यज्ञके निमित्त बुलाते हैं ॥ १६ ॥ सुवर्णके आभूषणही जिसकी बाहु हैं ऐसे रुद्रके अर्थ नमस्कार, सेनाको लानेवाले रुद्रके निमित्त नमस्कार, सम्पूर्ण दिशाओंके पालन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार, हरिद्वर्ण-

नमो॒ हिर॑ण्यबाहवे ॥ सेना॒न्ये॑ दि॒शाञ्च॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॒ हरि॑केशेभ्यः प॒शू॒नाम्पत॑ये॒ नमो॒ नमः॑ श॒ष्पिञ्ज॑राय॒ त्विषी॑मते पथी॒नाम्पत॑ये॒ नमो॒ नमो॒ हरि॑केशायोपवी॒तिने॑ पु॒ष्टाना॒म्पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ बभ्लु॒शाय॑ ॥ १७ ॥

वाले पत्ते जिनके केश ऐसे वृक्षस्वरूप रुद्रके अर्थ नमस्कार, पशुपति अर्थात् पशुओंके पालनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, नवीन नवीन हरे रंगवाले घासके तिनकोंकी सदृश प्रकाशवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, मार्गोंकी रक्षा करनेवाले रुद्रदेवके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लिये नमस्कार, ह्यापकेशधारी अर्थात् वृद्धावस्थारहित तथा यज्ञोपवीत (जनेऊ) धारण करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, गुणोंसे भरे हुए प्राणियोंके स्वामी रुद्रके अर्थ नमस्कार हो ॥ १७ ॥ वृषके ऊपर बैठनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, तथा शत्रुओंका छेदन करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार और अन्नोंकी रक्षा करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, संसार छुडा देनेवाले (मोक्ष देनेवाले) रुद्रके अर्थ नमस्कार,

नमो॑ बभ्लु॒शाय॑ ॥ व्या॒धिने॒ऽन्ना॑नां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ भ॒वस्य॑ हे॒त्यै ज॑ग॑तां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ रु॒द्राया॑ततावि॒ने क्षेत्रा॑णां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमः॑ सू॒ताया॑हन्त्यै॒ वना॑नां॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॒ रोहि॑ताय ॥ १८ ॥

जगत्का पालन करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, भयानक रूपवाले तथा आतताई अर्थात् आयुध धारण करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, क्षेत्र अर्थात् शरीरोंकी रक्षा करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, सारथीरूप रुद्रके अर्थ नमस्कार, नहीं मारनेवाले अर्थात् रक्षा करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तथा वनोंकी रक्षा करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार हो ॥ १८ ॥ रक्तवर्ण गृहादिकोंके बनानेवाले विश्वकर्मारूप रुद्रके लिये नमस्कार तथा वृक्षोंका पालन करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, भूमण्डलका विस्तार करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार तथा धनकी वृद्धि करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, स्थानोंको

नमो रोहिताय ॥ स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमो नमऽ उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमो नमः कृत्स्नायतया ॥ १९ ॥

भोगनेयोग्य करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, औषधियोंके पालन करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, मंत्रिरूप रुद्रके अर्थ नमस्कार तथा वाणिज्य व्यापार (लेन, देन) करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कक्षा (लतामंडप, गुल्म) की रक्षा करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, युद्धमें बड़े उच्च स्वरसे शब्द करते हुए शत्रुओंको रुलानेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, पदचरों (सेना अथवा पैदलों) का पालन करनेवाले रुद्रके अर्थ हमारा नमस्कार हो ॥ १९ ॥ कर्णपर्यन्त धनुषकी प्रत्यंचाको चढाकर रणमें चलनेवाले

नमंः कृत्स्नायुतया॥ धावंतेसत्त्वंनाम्पतंयेनमोनमः सहंमानायनिव्याधिनंऽआव्याधिनीनाम्पतंये नमोनमोंनिषङ्गिणेंककुभायस्तेनानाम्पतंयेनमोनमोंनिचेरवेंपरिचरायारंण्यानाम्पतंयेनमोनमोवञ्चंते ॥ २० ॥

रुद्रके अर्थ नमस्कार, शरणागतोंका पालन करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, शत्रुओंका तिरस्कार करनेवाले वा उनको मारनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार है; चारों ओरसे हनन करनेवाली शूरमाओंकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सेनाकी रक्षा करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, खड्गको धारण करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार अथवा धनुषबाण धारण करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, गुप्त[1]चोरोंके पालन करनेवाले रुद्रके लिये नमस्कार, अपहरणकी बुद्धि उत्पन्न करके विचरनेवाले तथा अपने उद्यानादिकोंके मार्गमें फिरनेवाले रुद्रके

नमोव्वञ्चंते ॥ परिवञ्चंतेस्तायूनाम्पतंयेनमोनमोंनिषङ्गिणंऽइषु
धिमतेतस्कंराणाम्पतंयेनमोनमं ÷ सृकायिभ्योजिघांꣳस
द्भ्योमुष्णताम्पतंयेनमोनमों सिमद्भ्योनक्तञ्चरंद्भ्योविकृन्ता
नाम्पतंयेनमं÷ ॥ २१ ॥

निमित्त नमस्कार, वनोंके स्वामी रुद्रके लिये नमस्कार, सबको वंचन करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार ॥ २० ॥ मायासे ठगनेवाले

१ चोररूप जीवका पालन करनेवाले शंकरको नमस्कार है ।

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुद्रके अर्थ नमस्कार, स्वामीका सच्चा हूं मैं ऐसा होकरके व्यवहारमें कहींभी उस स्वामीके धनको व्यय करता है उसको परिवंचन कहते हैं सो परिवंचन करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, घरमें कूमल देकर चोरी करनेवाले वा विना जाने हुए जो मनुष्य है जो कि रात दिन द्रव्य चुराते ऐसे चोरोंके स्वामी रुद्रके अर्थ नमस्कार, तरकश धारण करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार तथा भर्थरी धारण करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, जो प्रत्यक्ष चोर हैं तिनके स्वामी रुद्रके अर्थ नमस्कार, वज्र हाथमें लेकर शत्रु ओंको मारनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, क्षेत्रादिकोंमें धान्य चुरानेवालोंका पालन करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, खड्ग धारण कर रात्रिके समय गलियोंमें फिरनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, मार पीटकर धन लेनेवालोंके पति रुद्रके अर्थ नमस्कार ॥ २१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाग धारण करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार और पर्वतोंमें फिरनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, क्षेत्रादिकोंकी पृथ्वी वा निकृष्ट हरण करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, प्राणियोंको भय दूर करनेके निमित्त बाणोंको धारण करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार ! हे रुद्रो ! धनुष धारण करनेवाले तुम्हारे अर्थ नमस्कार,

नमं॑ऽउष्णीषिणे॑ ॥ गिरिचुराय॑कुलुञ्चानाम्पत॑येनमोनमं॑ऽइषु मद्भ्यो॑धन्वायिभ्य॑श्चवो नमोनमं॑ऽआतन्वानेभ्यं॑÷प्रति दधा॑नेभ्यश्चवोनमोनमं॑ऽआयच्छद्भ्योस्यं॑द्भ्यश्चवो नमोन मो॑विसृजद्भ्यं॑÷ ॥ २२ ॥

धनुषमें प्रत्यंचाको आरोपण करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, अच्छी तरह धनुषमें बाण धारण करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार तथा भली भांतिसे बाणको खींचनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुन्दर रीतिसे बाणको फेंकनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार ॥ २२ ॥ वैरियोंके ऊपर बाण त्याग करनेवाले रुद्रके निमित्त नमस्कार तथा शत्रुओंको मारनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, स्वप्नावस्थाका अनुभव करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार तथा जाग्रत्अवस्थावाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, सुषुप्तिअवस्थावाले

नमो॑ विसृजद्भ्यो॒ विध्य॑द्भ्यश्च वो॒ नमो॒ नमः॑ स्वप
द्भ्यो जाग्र॑द्भ्यश्च वो॒ नमो॒ नमः॒ शया॑नेभ्य॒ऽआसी॑ने
भ्यश्च वो॒ नमो॒ नम॒स्तिष्ठ॑द्भ्यो॒ धाव॑द्भ्यश्च वो॒ नमो॒ न
मः॑ स॒भाभ्यः॑ ॥ २३ ॥

रुद्रके अर्थ नमस्कार, स्थित हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार तथा खडे हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, चलनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार ॥ २३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सभारूप रुद्रके अर्थ नमस्कार, सभापति रुद्रके अर्थ नमस्कार, हयरूप रुद्रके निमित्त नमस्कार । हे रुद्र ! अश्वोंके स्वामी तुमारे अर्थ नमस्कार, हे रुद्र ! अव्याधिनी देवियोंके अथवा चेमूक अर्थ नमस्कार

नमः सभाभ्यः ॥ सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वे
भ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नमऽआव्याधिनीभ्यो
विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नमऽउगणाभ्यस्तृंहु
तीभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्यः ॥ २४ ॥

बाँधनेवाले आप रुद्रके अर्थ नमस्कार, जिनके भृत्यवर्ग श्रेष्ठ हैं ऐसी ब्रह्मी आदिक माताओंके लिये नमस्कार, मारनेमें शक्तिवाली दुर्गादिकोंके अर्थ नमस्कार ॥ २४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे रुद्र ! देवगणोंके सेवक भूतगणोंके अर्थ नमस्कार तथा गणोंके पति तुम्हारे अर्थ नमस्कार, व्रात अर्थात् भिन्न भिन्न जातियोंके समूहके अर्थ नमस्कार, व्रातपति आपके निमित्त नमस्कार, विषयमें जिनके चित्त हरसमय लग रहे हैं तिनके लिये अथवा बुद्धिमानोंके अर्थ नमस्कार, विषयोंमें प्रीति करने-

नमो॑ गुणेभ्यो॑ ॥ गुणप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ व्रातेभ्यो॒ व्रात॑प॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ गृत्सेभ्यो॒ गृत्स॑पतिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॒ विरू॑पेभ्यो॒ विश्वरू॑पेभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमः॒ सेना॑भ्यः ॥ २५ ॥

वालोंके वा बुद्धिमानोंके पति आपके अर्थ नमस्कार, कुरूप दिगम्बर (नग्न) मुण्ड (जिनका मुंडन हुआ हो) तथा जटावाले इत्यादिकोंके अर्थ नमस्कार, विश्वरूप तुम्हारे अर्थ तथा तुरंगवदन किन्नररूप हयग्रीवादिकोंके अर्थ नमस्कार ॥ २५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे रुद्र ! सेनारूपी आपके अर्थ नमस्कार, सेनापतियोंके अर्थ नमस्कार, रथमें बैठनेवालोंके अर्थ नमस्कार, रथरहित आपके अर्थ नमस्कार, रथ चलानेवालोंके अर्थ नमस्कार अथवा रथके

नमः सेनाभ्यः ॥ सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्योऽअरथे
भ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः संगृहीतृभ्यश्च वो नमो नमो मह
द्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः ॥ २६ ॥

अधिपतिके अर्थ नमस्कार, सारथीरूप तुम्हारे अर्थ नमस्कार, बडी जातिवाले अर्थात् विद्याधरादिकोंसे श्रेष्ठके अर्थ नमस्कार, अर्भक (बालक) रूप आपके अर्थ नमस्कार ॥ २६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिल्प जातिवालोंके अर्थ नमस्कार, रथकार,(बढईरूप) रुद्रके अर्थ नमस्कार, कुम्भकार (कुम्हार)के अर्थ नमस्कार, लोहकार (लुहार) रूपियोंके अर्थ नमस्कार, निषादजातिरूप रुद्रके अर्थ नमस्कार, पक्षियोंके समूहका नाश करनेवाले तुम्हारे अर्थ नमस्कार तथा गलेमें रस्सी बांध कुत्तोंको ले चलनेवा-

नमुस्तक्षंभ्यः ॥ नमुस्तक्षंभ्योरथकारेभ्यंश्चवोनमोनमुःकुलांलेभ्यः कुम्मारेंभ्यश्चवोनमोनमोंनिषादेभ्यंः पुञ्जिष्टेंभ्यश्चवोनमोनमंः श्वनिभ्योंमृगयुभ्यंश्चवोनमोनमुःश्वभ्यंः ॥ २७ ॥

लोंके निमित्त नमस्कार, श्वानोंके गलेमें रस्सी डालनेवाले गणोंके लिये नमस्कार, मृगलोभ करनेवाले तुम्हारे अर्थ नमस्कार, रूपोंके लिये नमस्कार ॥ २७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कुत्तेरूपियोंके अर्थ नमस्कार, कुत्तोंके पति तुम्हारे अर्थ नमस्कार, भव (संसार) रूपके अर्थ नमस्कार, हे रुद्र! दुःखके दूर करनेवाले आपके अर्थ नमस्कार, शिवके अर्थ नमस्कार, पशुपति[१] अर्थात् पशुओंको पालनेवालोंके अर्थ नमस्कार, हे रुद्र! महाहलाहल पान करनेसे नीली गर्दनवाले आपके नीलग्रीवरूपके

नमः॒ श्वभ्यः॑ ॥ श्वप॑तिभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॑ भ॒वाय॑ च रु॒द्राय॑ च॒
नमः॑ श॒र्वाय॑ च पशु॒पत॑ये च॒ नमो॒ नील॑ग्रीवाय च शिति॒कण्ठा॑य
च॒ नमः॑ कप॒र्द्दिने॑ ॥ २८ ॥

अर्थ नमस्कार तथा शितिकंठरूपके अर्थ नमस्कार तथा शिरके ऊपर जटाजूट धारण करनेवाले आपके अर्थ नमस्कार ॥ २८ ॥

१ इनके ज्ञानके सामने प्राणि आदिक सम्पूर्ण पशुओंकी सदृश हैं इसलिये इनका नाम पशुपति है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जटाजूटधारीके अर्थ नमस्कार, मुंडे हुए बालोंवालेके अर्थ नमस्कार, हजार नेत्रवाले इन्द्ररूपके अर्थ नमस्कार, सैकडों धनुष धारण करनेवालोंके अर्थ नमस्कार, कैलासपर्वतके ऊपर शयन करनेवालोंके अर्थ नमस्कार, सम्पूर्ण प्राणियोंके अन्तर्यामीके लिये नमस्कार, अत्यन्तकरके सेचन

नमः॑कप॒र्दिने॑ ॥ च॒व्यु॑प्तकेशायच॒नमः॑सहस्रा॒क्षाय॑चश॒तध॑
न्वनेच॒ नमो॑गिरिश॒याय॑च शिपिवि॒ष्टाय॑च॒नमो॑मी॒ढुष्ट॑माय॒चे
षु॑मतेच॒नमो॑ह्र॒स्वाय॑ ॥ २९ ॥

करनेवाले मेघरूपके अर्थ नमस्कार, बाण धारण करनेवालोंके अर्थ नमस्कार, सूक्ष्मशरीरवालोंके अर्थ नमस्कार ॥ २९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अल्पदेहवालोंके अर्थ नमस्कार, वामनरूप (जिसके सारे शरीरके अवयव सुकडकर थोडेहीमें आ जांय ऐसे) के अर्थ नमस्कार, बृहत्कायवालेके अर्थ नमस्कार, अत्यन्तही वृद्धावस्थावालेके अर्थ नमस्कार, बहुत आयुवालोंके अर्थ नमस्कार, विद्याविनयादिगुणसम्पन्न पण्डितोंके साथियोंके अर्थ नमस्कार,

नमो ह्रस्वाय॑ ॥ च वामनाय॑ च॒ नमो॑ बृह॒ते च॒ वर्षी॑यसे च॒ नमो॑ वृ॒द्धा
यं॑ च स॒वृधे॑ च॒ नमोऽग्र्या॑य च प्रथ॒माय॑ च॒ नम॑ऽआ॒शवे॑ ॥ ३० ॥ नम॑
ऽआ॒शवे॑ ॥ चाजि॒राय॑ च॒ नम॒ः शीघ्र्या॑य च॒ शीभ्या॑य च॒ नम॒ ऽऊ
र्म्या॑य चावस्व॒न्या॑य च॒ नमो॑ नादे॒याय॑ च द्वी॒प्या॑य च ॥ ३१ ॥

जगत्के आदि भूतके अर्थ नमस्कार, सबमें मुख्यके अर्थ नमस्कार, जगद्व्यापीके अर्थ नमस्कार ॥ ३० ॥ जगत्में व्यापक रुद्रके अर्थ नमस्कार, वेगसे चलनेवालेके अर्थ नमस्कार, वेगवाली सम्पूर्ण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वस्तुओंमें व्याप्तके अर्थ नमस्कार, आत्मश्लाघी जलरूपके अर्थ नमस्कार, जलकी तरंगोंमें व्याप्तके अर्थ नमस्कार, स्थिरजलरूपके अर्थ नमस्कार, नदियोंमें होनेवालेके अर्थ नमस्कार, द्वीपमें होनेवालेके लिये नमस्कार ॥ ३१ ॥ अत्यन्त प्रशंसा करनेयोग्यके अर्थ नमस्कार, अल्पके निमित्त नमस्कार, तरुणके अर्थ नमस्कार, जगत्की आदिमें हिरण्यगर्भरूपसे प्रादुर्भूत हुएके अर्थ नमस्कार, प्रलयके

नमो॒ ज्ज्ये॒ष्ठाय॑ ॥ च कनि॒ष्ठाय॑ च॒ नमः॑ पूर्व॒जाय॑ चापर॒जाय॑ च॒ नमो॑ मध्य॒माय॑ चापग॒ल्भाय॑ च॒ नमो॑ जघ॒न्या॑य च॒ बुध्न्या॑य च॒ नमः॑ सो॒भ्या॑य ॥ ३२ ॥

समय कालाग्निकी सदृश रूप धारण करनेवालेके अर्थ नमस्कार तथा सृष्टिके मध्यमें तिर्यग्आदि रूपसे उत्पन्न होनेवालेके अर्थ नमस्कार, व्युत्पत्तिशून्यके अर्थ नमस्कार, जघनप्रदेशमें उत्पन्न होनेवालेके अर्थ नमस्कार, वृक्षादिकोंकी जडमें उत्पन्न होनेवालेके अर्थ नमस्कार तथा गन्धर्वलोकमें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार ॥ ३२ ॥ पुण्य और पापोंसे युक्त मनुष्यलोकमें उत्पन्न होनेवालेके अर्थ नमस्कार, विवाहके समय होनेवाले हस्तसूत्रमें उत्पन्न होनेवालेके अर्थ नमस्कार तथा पापियोंको नरककी वेदना देनेवालेके अर्थ नमस्कार, कुशलमें उत्पन्न होनेवालेके लिये नमस्कार, वेदके मंत्र या

नमः सोभ्याय ॥ च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्या
य च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नमऽउर्वर्याय च खल्या
य च नमो वन्याय ॥ ३३ ॥

यशद्वारा उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, वेदान्तमें उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, सर्व सस्यसम्पन्न पृथ्वीमें धान्यरूपके अर्थ नमस्कार, धान्यविवेचन देशविशेषमें उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, वनके विषैं वृक्षादिरूपसे उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार ॥ ३३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

काननोंमें द्रुमादि होकर उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, घास अथवा लतावेलियोंमें उत्पन्न होनेवालेके अर्थ नमस्कार, शब्दस्वरूपके अर्थ नमस्कार, प्रतिशब्द (जिस प्रकार कूपादिकोंमें शब्द करनेसे दूसरा शब्द निकलता है उसको प्रतिशब्द कहते हैं) स्वरूपवालेके अर्थ नमस्कार, शीघ्रगामी सेनावालेके अर्थ

नमो॒ वन्या॑य॒ च॒ कक्ष्या॑य च॒ नमः॑ श्र॒वाय॑ च प्रति॒श्र॒वाय॑ च॒ नम॑ऽआ॒शुषे॑णाय चा॒शुर॑थाय च॒ नमः॒ शूरा॑य चावभे॒दिने॑ च॒ नमो॑ बि॒ल्मिने॑ ॥ ३४ ॥

नमस्कार, शीघ्र चलनेवाला है रथ जिसका ऐसेके अर्थ नमस्कार, युद्धमें शूरता दिखानेवालेके अर्थ नमस्कार, शत्रुओंको विदीर्ण करनेवालेके अर्थ नमस्कार ॥ ३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिरस्त्राणवालेके अर्थ नमस्कार, कवच (बख्तर) धारण करनेवालेके अर्थ नमस्कार तथा लोहका कवच धारण करनेवालेके अर्थ नमस्कार, सेनाधिपके अर्थ नमस्कार, संसारमें प्रसिद्धके अर्थ नमस्कार,

नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च कव॒चिने॑ च॒ नमो॑ व॒र्म्मिणे॑ च वरू॒थिने॑ च॒ नम॑ः श्रु॒ताय॑ च श्रुतसे॒नाय॑ च॒ नमो॑ दुन्दु॒भ्या᳖य चाहन॒न्या᳖य च॒ नमो॑ धृ॒ष्णवे॑ ॥ ३५ ॥

प्रसिद्ध सेनावालेके अर्थ नमस्कार, भेरीसे उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, जिस दण्डेसे बाजे बजाते हैं उस दण्डेसे उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, धृष्टके अर्थ नमस्कार ॥ ३५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाचालके अर्थ नमस्कार, विचारशीलके अर्थ नमस्कार, पंडितके अर्थ नमस्कार, तर्कस धारण करने-
वालेके अर्थ नमस्कार, भरतरी धारण करनेवालेके लिये नमस्कार, तीक्ष्ण शरवालेके अर्थ नमस्कार,

नमो॑धृ॒ष्णवे॑॥ च॒प्र॒मृ॒शाय॑च॒नमो॑निष॒ङ्गिणे॑चेषु॒धि॒मते॑च॒नम॑
स्ती॒क्ष्णेष॑वे॒चायु॒धिने॑च॒नम॑ः स्वायु॒धाय॑चसु॒धन्व॑ने च॥ ३६॥
नमः॒स्रुत्या॑य ॥ च॒पथ्या॑यच॒नमः॒काट्या॑यच॒नीप्या॑यच॒न
मः॒कुल्या॑यच॒सर॒स्या॑यच॒ नमो॑नादे॒याय॑ च वै॒शन्ताय॑च॒नमः॒
कूप्या॑य ॥ ३७ ॥ ॥३४॥

सम्पूर्ण आयुधधारीके अर्थ नमस्कार, सुन्दर धनुष-
धारीके अर्थ नमस्कार ॥ ३६ ॥ क्षुद्रमार्गमें उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, मैदानवाले मार्गमें उत्पन्न

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होनेवालेके अर्थ नमस्कार, उत्कट मार्ग वा छोटी २ नदियें आदिकोंमें उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, जहां झरनोंका जल गिरता है उस भूप्रदेशमें उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, कृत्रिम नदियों (नहर) में उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, सरोवरमें उत्पन्न होनेवालेके अर्थ नमस्कार, सरितादिकोंमें उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, जलसहितके अर्थ नमस्कार, क्षुद्र सरोवरमें उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, कुएमें उत्पन्न हुएके

नमुः कूप्प्यां य॥ चावट्ट्याय च नमो वीद्ध्र्याय चातप्प्याय च नमो
मेग्घ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्प्याय चावर्ष्प्याय च नमो वा
त्याय॥ ३८॥ अर्थ नमस्कार ॥३७॥ कूपमें उत्पन्न होनेवालेके अर्थ नमस्कार, गड्ढेमें उत्पन्न

होनेवालेके अर्थ नमस्कार, निर्मल शरदऋतुके नव नीरदोंमें उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार, धूपके विषैं उत्पन्न होनेवालेको नमस्कार, मेघमें होनेवालके लिये नमस्कार, बिजलीके विषैं उत्पन्न होनेवालेके अर्थ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्कार, वर्षाके समय जातके अर्थ नमस्कार, वर्षारहित दिन (घटाटोप) में उत्पन्न होनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, पवनमें उत्पन्न हुएके लिये नमस्कार ॥ ३८ ॥ तथा वायुके चलनेके समय (आंधी) में उत्पन्न होनेवालेके निमित्त नमस्कार, प्रलयकालमेंभी रहनेवालेके अर्थ नमस्कार, गृहभूमिके विषें पैदा हुएके

नमो॒ वात्या॑य ॥ चु॒ रेष्म्या॑य चु॒ नमो॑ वास्तु॒व्या॒य च वा॒स्तुपा॑य चु॒ नम॒ः सोमा॑य च रु॒द्रा॑य च॒ नम॑स्ताम्रा॒य॑ चारु॒णाय॑ च॒ नम॑ः शु॒ङ्गवे॑ ॥ ३९ ॥

लिये नमस्कार, गृहभूमिकी रक्षा करनेवालेके लिये नमस्कार, उमाके साथ वर्त्तमान सोमके अर्थ नमस्कार, सारे दुःखोंको नाश करनेवालेके अर्थ नमस्कार, रक्तादिक रूपवालेके अर्थ नमस्कार, थोडे लाल (गुलाबी) तथा अरुणकी सदृश प्रकाशवाले लालरूपवालेके अर्थ नमस्कार और सुखको प्राप्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करानेवालेके अर्थ नमस्कार ॥ ३९ ॥ तथा सुखको प्राप्त करनेवाली वेदरूप वाणियें जिसकी ऐसे रुद्रदेवके अर्थ नमस्कार, पशुपति अर्थात् प्राणियोंका पालन करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, अरिकुलके विनाशार्थ तीक्ष्ण आयुधकी सदृश रुद्रके लिये नमस्कार, भयानक अर्थात् शत्रुओंके लिये भय

नमः॑ शुङ्गवे॑ ॥ च पशुपत॑ये च॒ नमः॑ऽउ॒ग्राय॑ च भी॒माय॑ च॒ नमो॑ऽग्रेव॒धाय॑ च दूरेव॒धाय॑ च॒ नमो॑ ह॒न्त्रे च॒ हनी॑यसे च॒ नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॒ हरि॑केशेभ्यो॒ नमः॑ स्ता॒राय॑ ॥ ४० ॥

उपजानेवालेके अर्थ नमस्कार, अपने अगाडी स्थितों (शत्रुओं) को मारनेवालेके अर्थ नमस्कार, किसी प्रकार दूरमें स्थितको मारनेवालेके अर्थ नमस्कार तथा साधारण मारनेवालेके अर्थ नमस्कार, लोकके विषैं मारनेवाले रुद्ररूपके अर्थ नमस्कार, प्रलयकालमें अतिशय करके सबको मारता है जो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुद्र तिसके अर्थ नमस्कार, हरिद्वर्णवाले केशपत्रोंकरके युक्त (कल्पवृक्षादिकरूप) वृक्षोंके अर्थ नमस्कार, संसारसागरसे तारनेवालेके अर्थ नमस्कार ॥ ४० ॥ सुखरूप अथवा कल्याणस्वरूप और संसारस्वरूप अर्थात् भुक्ति तथा मुक्तिस्वरूप रुद्रके अर्थ नमस्कार तथा संसारका सुख देनेवाले

नमः॑ शम्भुवाय॑ ॥ च मयोभुवाय॑ च नमः॑ शंकराय॑ च म
यस्कराय॑ च नमः॑ शिवाय॑ च शिवत॑राय च ॥ ४१ ॥

रुद्रके अर्थ नमस्कार, सांसारिक सुखकर्त्ताके अर्थ नमस्कार तथा मोक्षका सुख देनेवाले रुद्रके निमित्त नमस्कार, पापरहित वा कल्याणमय मूर्तिवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, अपने भक्तजनोंकोभी पापरहित करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार ॥ ४१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस संसारसागरके पर्ले किनारेपर उत्पन्न हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, संसारसागरके बीचमें नद्यादिरूपसे हुएके अर्थ नमस्कार, जप तथा मंत्रादिद्वारा पापका नाश करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, उत्कृष्ट तत्त्वज्ञानके द्वारा संसारके तरनेका कारण रुद्रके अर्थ नमस्कार, प्रयागराज पुष्कर इत्यादिक पवित्र ती-

नमः॒ पा॒र्याय॑ ॥ चावा॒र्या॒यच॒ नमः॑ प्र॒तर॑णायच॒ोत्तर॑णायच॒ नम॒स्तीर्थ्या॑यच॒ कूल्या॑य च॒ नमः॒ शष्प्या॑यच॒ फेन्या॑यच॒ नमः॑ सिक॒त्या॑य ॥ ४२ ॥

र्थोंमें उत्पन्न हुए रुद्रभगवान्के अर्थ नमस्कार, वापी वा तटमें हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, बालतृण (सुन्दर २ हरी घास) में उत्पन्न होनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, फेन (जलके बुद्बुदादि) में उत्पन्न होनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, वालुकामें उत्पन्न हुएके अर्थ नमस्कार ॥ ४२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रेतीमें उत्पन्न होनेवाले रुद्रदेवके अर्थ नमस्कार, नद्यादिकोंके प्रवाहमें जातके अर्थ नमस्कार, जहांके विषय छोटी २ पाषाणोंकी शिला तथा रेता होता है ऐसी भूमिमें उत्पन्न रुद्रके अर्थ नमस्कार, स्थिर जलप्रदेश (जहां बरफ बहुत पडता है तिस) में उत्पन्न हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, जटाजूटवाले रुद्रके

नमः॑ सिक॒त्त्या॑य ॥ च॒ प्र॒वा॒ह्या॑य च॒ नमः॑ किꣳशि॒ला॑य च॒ क्षय॒णाय॑ च॒ नमः॑ कप॒र्दिने॑ च पुल॒स्तये॑ च॒ नमः॑ऽइरि॒ण्या॑य च प्र॒प॒थ्या॑य च॒ नमो॑ व्र॒ज्ज्या॑य ॥ ४३ ॥

अर्थ नमस्कार, शरीरमें स्थित सत्तावाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, फलने फूलनेवाली पृथ्वी वा देशमें उत्पन्न हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, बहुतसे मार्गमें उत्पन्न हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, गौओंके बंधनस्थानमें उत्पन्न हुए रुद्रदेवके अर्थ नमस्कार ॥ ४३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

गोसमुदायमें उत्पन्न हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, गौओंके चारेमें उत्पन्न हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, शय्या (सेज) में हुएके अर्थ नमस्कार, गृहोत्पन्न अर्थात् घरमें हुएके अर्थ नमस्कार, हृदयमें उत्पन्न हुए जीवस्वरूप रुद्रके अर्थ नमस्कार, पलकका लगना वा जलका घूमना अथवा बरफ आदिकोंके

नमोव्व्रज्ज्याय ॥ चगोष्ठ्यायचनमस्तल्प्यायचगेह्यायचन
मोहृदय्यायचनिवेष्प्यायचनमःकाट्यायचगह्वरेष्ठायचन
मःशुष्क्याय ॥ ४४ ॥

विषयमें पैदा हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, बडे भारी गह्वर वनमें उत्पन्न हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, गह्वर (पर्वतादिकोंकी गुफा) में खडे हुए रुद्रके लिये नमस्कार, सूखी वस्तुओंमें उत्पन्न हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार ॥ ४४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सूखे हुए काष्ठादिकोंमें उत्पन्न हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, गीले काष्ठादिकोंमें उत्पन्न हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, धूलिमें हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, परागमें उत्पन्न हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, जहां जानेकी गति नहीं है ऐसे प्रदेशमें उत्पन्न हुए रुद्रके लिये नमस्कार, बल्वादिक तृणविशेषमें हुए रुद्रके अर्थ

नमः॒ शुष्क्या॑य ॥ च॒ह॒रि॒त्या॑य च॒ नमः॑ पा॒ᳬसु॒व्या॑य च रज॒स्या॑य च॒ नमो॒ लो॒प्या॑य चोल॒प्या॑य च॒ नमः॒ऽऊर्व्या॑य च॒ सू॒र्व्या॑य च॒ नमः॑ पु॒र्णा॑य ॥ ४५ ॥

नमस्कार, वडवानल (जलकी अग्नि) में उत्पन्न रुद्रके अर्थ नमस्कार, कल्पाग्निमें हुए रुद्रके अर्थ नमस्कार, वृक्षोंके पत्ररूपवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार ॥ ४५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

द्रुमोंके पर्णरूपके अर्थ नमस्कार, जीर्ण पत्ते गिरनेवाले भूप्रदेशके अर्थ नमस्कार, उद्योग करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, अरिकुलके घालकके अर्थ नमस्कार, भक्तिरहित जनोंको सब ओरसे दीनताको देनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, पापियोंके अर्थ अतिशय करके दैन्य करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार,

नमः पर्णाय ॥ चपर्णशदायचनमऽउद्गुरमाणायचाभिघ्नतेच
नमऽआखिदतेचप्रखिदतेचनमऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्च
वोनमोनमोवःकिरिकेभ्योदेवानाᳯंहृदयेभ्यो नमोविचि
न्वत्केभ्योनमोविक्षिणत्केभ्योनमऽआनिर्हतेभ्यः ॥ ४६ ॥

बाणोंको करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार । हे रुद्र ! धनुषके करनेवाले तुम्हारे अर्थ नमस्कार, वृष्टयादिकके द्वारा जगत्को करनेवाले रुद्रके अर्थ नमस्कार, धर्मात्मा तथा पापियोंको जुदे जुदे

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.
CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करनेवाले अग्नि आदिकोंके अर्थ नमस्कार पापके लिये अनेक हिंसा करनेवाले अग्निआदिकोंके अर्थ नमस्कार, सब प्रकारकरके सृष्टिसे पृथक् रुद्रावतार अग्नि, वायु, सूर्यके अर्थ नमस्कार ॥ ४६ ॥ हे पापियोंको दुर्गति प्राप्त करानेवाले ! हे सोमके पति, हे स्त्रीरहित दरिद्रकी सदृश अर्थात् अद्वितीय, हे नीललोहित अर्थात् विषपान करनेसे नील कंठवाले अन्यत्र गौरवर्णवाले, हे शिव अर्थात् कल्याणस्व-

द्रापेऽअन्धसस्पतेदरिद्रनीललोहित ॥ आसाम्प्रजानामेषा

म्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोचनः किञ्चनाममत् ॥ ४७ ॥

रूप तुम हमारी उन प्रजाओंको तथा गौआदिक पशुओंको मत मारो अर्थात् रक्षा करो ! और भी हमारे प्रजा पशु (घोडे, ऊंट) आदिकोंका नाश मत करो । तथा हमारे सभी द्विपद (मनुष्यादिक, बैल, बकरी आदिक) सबोंका आरोग्य करो ॥ ४७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बडे अथवा बलवान् तथा जटाजूटको धारण करनेवाले शूरमाओंके सहित वा जिससे शत्रु नष्ट हो जाते हैं ऐसे रुद्रके अर्थ हम अपने बुद्धिको अर्पण करते हैं। जिस प्रकारसे कि पुत्र अथवा पशुओंके लिये तथा द्विपद और चतुष्पदोंमें सुख हुआ और जैसे इस ग्रामादिमें रहनेवाले सम्पूर्ण

इमारुद्रायं॥ तवसेंकपर्द्दिनेंक्षयद्वीरायप्रभंरामहेमतीः॥ यथा शमसंद्विपदेचतुंष्पदेविश्वंपुष्टंग्रामेंऽअस्मिन्ननातुरम् ॥ ॥ ४८ ॥ यातें रुद्रशिवातनूः शिवाविश्वाहांभेषजी॥ शिवारुतस्यंभेषजीतयांनोमृडजीवसें॥ ४९ ॥

मनुष्य सम्पत्तियुक्त और निरुपद्रव हुए हैं इसी प्रकार रुद्रके अर्थ हम अपनी मतिको अर्पण करते हैं ॥ ४८ ॥ हे रुद्र ! आपका यह कल्याणस्वरूप (व्रणादिरहित) जो शरीर है तिस देहसे हमारे जीव-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नको सुखी करो कैसा वह शरीर है कि पापरहित और नित्यप्रति कल्याणकारी भेषज (दवा) स्वरूप तथा देहकी व्याधिका नाश करनेवाली अर्थात् सबके शरीरको हृष्ट पुष्ट करनेवाला शरीर है॥ ४९॥ रुद्रदेवके आयुध (हथियार) हमारी रक्षा करो तथा रुद्रभगवान्‌की द्रोहमिश्रित मति

परि॑णो रु॒द्रस्य॑ हे॒तिर्वृ॑णक्तु॒ परि॑ त्वे॒षस्य॑ दु॒र्म॒तिर॑घा॒योः ॥ अव॑ स्थि॒रा म॒घव॑द्भ्यस्तनुष्व॒ मीढ्व॑स्तो॒काय॒ तन॑याय मृड ॥ ५० ॥

हमारा त्याग न करो। हे कामोंकी वर्षा करनेवाले रुद्र! आप (हमारे प्रति) अपने दृढ कोदण्डको प्रत्यंचारहित करो क्योंकि होमकी सामग्रीरूप धनवाले यजमानोंका भय दूर होगा और पुत्रपौत्रादि-कोंको सुखी करो॥ ५०॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे अत्यन्त कामनाके दाता ! हे अनन्त कल्याणोंके करनेवाले रुद्र ! आप हमारे लिये शान्तस्वभाव और प्रसन्नचित्त हूजिये और कहीं दूर प्रदेशमें अपने त्रिशूलादिक आयुधोंको स्थापित करके तथा वर्म-कोभी दूर रखकर शोभाके कारण प्रत्यंचाशून्य धनुषको धारण कर आप हमारे निकट पधारिये ॥५१॥

मीढुंष्टमशिवंतम ॥ शिवोनंः सुमनांभव ॥ पुरमेवृक्षऽआयुंध न्निधायकृत्तिंवसांनुऽआचंरपिनांकम्बिब्भ्रदागंहि॥ ५१ ॥ विकिंरिद्रविलोंहितनमंस्तेऽअस्तुभगवः ॥ यास्तेंसुहस्रंठंहेतयोन्यमुस्स्मान्निवंपन्तुताः॥ ५२ ॥

हे उपद्रवोंके नाश करनेवाले ! हे निष्पाप ! हे शुद्धस्वरूप रुद्र ! आपके अर्थ नमस्कार है । हे भगवन् ! आपके संख्यारहित अस्त्र शस्त्र हमसे अन्य (हमारे शत्रु) को मारे । हमारी यह आपसे प्रार्थना है ॥५२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे रुद्र ! आपके हाथके जो यह असंख्य आयुध हैं सो इन आयुधोंके मुख (अग्रभाग, फल) को हमसे तुम दूर रखो । हे त्रिशूलादिके धारण करनेवाले रुद्र ! यह हम प्रार्थना करते हैं ॥ ५३ ॥ जे रुद्र भूप्रदेशमें

सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ॥ तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥ ५३ ॥ असंख्याता सहस्राणि ॥ ये रुद्रा ऽ अधि भूम्याम् ॥ तेषां ँ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ ५४ ॥

स्थित हैं उनके धनुषको सहस्रों योजन[1] व्यवहित मार्गमें प्रतारते अर्थात् प्रत्यञ्चारहित कर अपनेसे दूर फेंकते हैं ॥ ५४ ॥

[1] चार कोसका एक योजन होता है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जे रुद्र अन्तरिक्षमें स्थित हैं तिनके धनुषोंकोभी पहलीही तरह जलसे परिपूर्ण अन्तरिक्षमें ज्याशून्य करके हम रखते हैं ॥ ५५ ॥ विषपान करनेसे कहीं कहीं जिनकी ग्रीवा नीली और श्वेत है ऐसे द्युलो-

अस्मिन्न्महत्त्यर्णवेन्तरिक्षेभवाऽअधि ॥ तेषांᳬसहस्रयोजनेव धन्न्वानितन्न्मसि ॥ ५५ ॥ नीलंग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिवंᳬरुद्द्राऽउपश्श्रिताः ॥ तेषांᳬसहस्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ॥ ५६ ॥ नीलंग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः क्षमाचराः ॥ तेषांᳬस हस्रयोजनेवधन्न्वानितन्न्मसि ॥ ५७ ॥

कमें स्थित रुद्रोंके धनुषोंकोभी प्रत्यंचारहित करके सहस्र योजनके मार्गमें हम धारण करते हैं ॥ ५६ ॥ और जे रुद्र पातालमें स्थित हैं उनके धनुषोंकोभी पहली तरहसे ज्यारहित करके हम स्थापित करते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हैं ॥ ५७ ॥ जे रुद्र बालतृणकी सदृश हरिद्वर्णवाले और नीली ग्रीवायुक्त रुधिरसे वार्जित तेजमय शरीरवाले (पवित्र पीपल आदि) वृक्षोंमें स्थित हैं तिनके धनुषोंकोभी पूर्ववत् ज्यारहित करके हम स्थापित

येवृक्षेषुं शुष्पिञ्जंरानीलंग्ग्रीवाविलोंहिताः ॥ तेषांᳲसहस्रयोजुनेवुधन्न्वांनितन्न्मासि ॥ ५८ ॥ येभूतानामधिंपतयोविशिखासंःकपुर्दिनंः ॥ तेषांᳲसहस्रयोजुनेवुधन्न्वांनितन्न्मासि ॥ ५९ ॥

करते हैं ॥ ५८ ॥ भूत (प्राणी) अथवा (देवजातिविशेष) के स्वामी जो कि मुण्डन शिरवाले हैं और कुछ जटाओंके धारण करनेवाले हैं तिन रुद्रोंके धनुषोंकोभी पहलेही प्रकारसे हम धारण करते हैं॥५९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जे वैदिक तथा लौकिक मार्गोंके पति तथा औरभी मार्गोंकी रक्षा करनेवाले, अन्न वा भूको धारण करनेवाले, जीवमात्र युद्ध करनेवाले रुद्रोंकेभी पूर्वकी सदृश हम धारण करते हैं ॥ ६० ॥ खड्ग और आयु-

येपृथाम्पंथिरक्षंयऽऐलवृदाऽआंयुर्युधंः ॥तेषांॅंस
हस्रयोजनेवधन्वांनितन्मासि ॥६०॥ येतीर्थानिंप्र
चरंन्तिसृकाहंस्तानिषङ्गिणंः ॥ तेषांॅंसहस्रयोजने
वधन्वांनितन्मासि ॥ ६१ ॥

धोंको धारण करनेवाले जे रुद्र (प्रयागराज गणमुक्तीश्वर पुष्कर आदि) पवित्र तीर्थोंमें विचरते हैं तिन रुद्रोंके धनुषोंकोभी सहस्रों योजनमें ज्यारहित करके धरते हैं ॥ ६१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे रुद्र ! खाये हुए अन्नोंमें स्थिति हो करके प्राणियोंको विशेष करके व्यथित करते हैं अर्थात् वीर्यादि-कोंमें विकारको लाकर अनेक २ रोगादिकोंकी उत्पत्ति करते हैं, और जे रुद्र पात्रों (बर्त्तनों) में स्थित होकर पात्रवर्ती दूध जलके द्वारा प्राणियोंको मारते हैं तथा अन्न जलके खाने पीनेवाळोंको पीडा देनेके

येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ॥ तेषांᳬ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ ६२ ॥ यऽएतावन्तश्च भूयांᳬसश्च दिशो रुद्रा व्वितस्थिरे ॥ तेषांᳬ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ॥ ६३ ॥

अधिकारी हैं तिन रुद्रोंकेभी धनुषोंको पहलेकी नाईं हम ज्याशून्य करते हैं॥६२॥ जिन रुद्रदेवके पूर्वोक्त प्रमाण हैं वे रुद्र तथा अत्यन्त हो बहुत कहे हुओंसेभी विशेष जे रुद्र हैं और दशों दिशाओंमें व्याप्त जे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुद्र हैं, तिन रुद्रोंकेभी कोदण्डोंको पहलेही सदृश प्रत्यंचाविहीन करके धरते हैं ॥ ६३ ॥ जिन रुद्रगणोंकी बाणवृष्टि आयुधसदृश है तिन रुद्रोंके अर्थ नमस्कार हो जो द्युलोकमें रहनेवाले हैं तिन्ही रुद्रोंके अर्थ पूर्वकी ओर दश अंगुली करता हूं अर्थात् हाथ जोडता हूं। दक्षिणकी ओर दशों अंगुली करता हूं

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येदिवि येषांवर्षमिषवः ॥ तेभ्योदशप्प्राचीर्दशंदक्षिणादशंप्प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः ॥ तेभ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तु तेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥ ६४ ॥

पश्चिम और उत्तरकी ओरभी उसी प्रकार दोनों हाथ जोडकर प्रणाम करता हूं ऊपरकी ओर अंजलि बांधकर प्रणाम करता हूं उन रुद्रोंके निमित्त अंजलीपूर्वक नमस्कार करता हूं। वे रुद्र हमारी रक्षा करें

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और हमें सुख दें। जिनसे हम वैर करते हैं तथा जो पुरुष हमसे वैर करते हैं उन पुरुषोंको हम पूर्वोक्त रुद्रोंके तीक्ष्ण दंष्ट्रावाले मुखोंमें स्थापन करते हैं। वे रुद्र हमारे संपूर्ण शत्रुओंका विनाश करें ॥ ६४ ॥ जो अंतरिक्षमें रहनेवाले रुद्र हैं उनको हमारा नमस्कार है। जो रुद्र दुष्ट पवनसे अन्नको बिगाडकर वात-

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः ॥ तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥ ६५ ॥

रोग उत्पन्न करके प्राणियोंको मारते हैं अन्तरिक्षमें रहनेवाले उन वातरूप रुद्रोंको नमस्कार है। पूर्वकी ओर अंजली बांधकर प्रणाम करते हैं ॥ ६५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो पृथ्वीमें रहनेवाले रुद्र हैं जिनका आयुध अन्न है अर्थात् कुत्सित अन्नके भक्षणसे रोगादि उत्पन्न कर जनोंको मारते हैं भूमिमें रहनेवाले उन रुद्रोंको नमस्कार है। वे हमारी रक्षा करें हम उनको पूर्वकी ओर

नमोऽस्तुरुद्रेभ्योयेपृथिव्यांयेषामन्नमिषवः ॥ तेभ्योदश प्राचीर्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टि त मेषाञ्जम्भेदध्मः ॥ ६६ ॥ इति रुद्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

हाथ जोड़के नमस्कार करते हैं। इत्यादि पूर्ववत् ॥ ६६ ॥ इति श्रीव्रजरत्नभट्टाचार्यकृतषडंगरुद्राष्टाध्यायीभाषाटीकायां पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे परमात्मन् ! पुत्रपौत्रादिसे सम्पन्न हम यजमान यज्ञ और व्रतोंमें आपके स्वरूपोंमें चित्तको लगाके आपका सेवन करें अथवा आपसे संबन्ध रखनेवाले हों ॥ १ ॥ हे पापियोंको रुलानेवाले रुद्र ! अम्बिका प्रकृतिनामक बहनके साथ हमारा दिया हुआ यह पुरोडाश आपका भाग है, इसको सेवन करो । श्रेष्ठ

हरिः ॐ व्वयꣳसोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः ॥ प्रजावन्तꣳस
चेमहि ॥ १ ॥ एषते रुद्रभागःसहस्वस्राम्बिकयातञ्जुषस्व
स्वाहैषतेरुद्रभागऽआखुस्तेपशुः ॥ २ ॥

होम हो । हे रुद्र ! हमसे उपकीर्ण किया हुआ यह पुरोडाश आपका भाग है, धन होनेपरभी जो न खाय न दे न होम करे वह कृपण पुरुष तुम्हारा पशु है ॥ २ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे शत्रुओंके रुलानेवाले तीन लोकके पिता त्रिनेत्र शिव ! जो कि सर्गादिसे क्रीडा करनेवाले जयशील श्रेष्ठ स्तोत्रोंसे स्तुति करे हुए हैं, उनको शास्त्रद्वारा जानकर हृदयमें स्थापन करें जैसे वह हमको अपने ज्ञानमें वसनेहारा करें, जैसे हमको भक्तोंमें श्रेष्ठ करें, जैसे हमको सिद्धान्तोंसे युक्त करें ॥ ३ ॥ हे पशुपति

अवंरुद्रमंदीमह्यवंदेवन्त्र्यंम्बकम् ॥ यथांनोवस्यंसस्करद्यथां
नः॑श्रेयंसस्करद्यथांनोव्यवसाययांत् ॥ ३ ॥ भेषजमंसि
भेषजङ्गवेऽश्वांयपुरुंषायभेषजम् ॥ सुखम्मेषायंमेष्यै ॥ ४ ॥

शङ्कर ! तुम धेनुसमूहके निमित्त औषधीकी समान सब उपद्रवोंके शान्त करनेवाले हो, पशुसमूहोंके निमित्त औषधीकी समान सब उपद्रवोंके शान्त करनेवाले हो, हमारे पुरुषसमूहोंके निमित्त औषधीकी समान सब कष्ट दूर करनेवाले हो, आप हमारे मैंढे और भेड़ोंके निमित्त सुखकारक हो ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संसारकी पारमार्थिक पुष्टिके बढानेवाले, पुरुषोंकी प्रार्थना परमेश्वरसे त्रिनेत्र वा अकार उकार मकारस्वरूप वा पृथ्वी अन्तरिक्ष स्वर्गस्थानवाले शङ्करका हम ध्यान पूजन करते हैं । हे शिव ! हमें आप मृत्यु वा संसारके आवागमनसे छुडाओ जैसे सुगन्धित पके हुए उर्वारुक नाम फलको उसके

त्र्यंम्बकंयजामहेसुगन्धिम्पुंष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धं नान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ॥ त्र्यंम्बकंयजामहेसुगन्धिम्पं तिवेदनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धंनादितोमुक्षीयमामुतः ॥ ५ ॥

डंठलेसे क्रम निर्वाण नाम मोक्षसे हमको मत छुडाओ (कुमारियें प्रार्थना करती हैं) भर्त्ता (पति)के प्राप्त करानेवाले त्रिलोकीके पति त्रिलोचन महादेवका हम पूजन करती हैं । हे परमेश्वर ! जन्मके कारण कर्म अथवा पतिलोकसे मत छुडाओ जैसे शोभन गंधयुक्त पक्के उर्वारुक फलको उसके डंठलेसे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

छुटाते हो पतिके गृह वा पतिलोकसे हमको मत छुटाओ ॥ ५ ॥ हे शंकर ! यह शेष हवि आपका भोजन है, इसे भोग लगाकर इसी कारण हमारे शत्रुओंका निवारण करनेसे धनुष चढाये हुए वस्त्रसे ढके हुए धनुषवाले श्रेष्ठ तुम मुंजावान् पर्वतका अतिक्रमण करके जाओ हे चर्माम्बर धारण करनेवाले रुद्र !

एतत्ते रुद्रावसन्तेनंपरोमूजवतोतीहि ॥ अवततधन्वा
पिनाकावसुःकृत्तिवासाऽअहिंसन्नःशिवोतीहि ॥ ६ ॥ त्र्या
युषंजमदग्नेःकश्यपस्यत्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽ
अस्तुत्र्यायुषम् ॥ ७ ॥

क्रोधरहित आनन्दस्वरूप तुम हमको न मारकर पर्वतको अतिक्रमण करके जाओ ॥ ६ ॥ जो जमदग्निमुनिकी बाल्य यौवन वृद्धावस्थाका समाहार (एकत्र होना) है, ब्रह्माजीके पौत्र कश्यप प्रजापतिकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तीनों अवस्थाओंका जो समाहार है, इन्द्रादिदेवताओंमें तीनों अवस्थाओंका जो समाहार है, वे आयुके तीन भाग हम यजमानोंको प्राप्त हों अर्थात् अल्पमृत्युसे रक्षा हो ॥ ७ ॥ हे क्षुराभिमानी देवता ! तुम नामसे शान्त हो, वज्र तेरा पिता है, तेरे अर्थ नमस्कार है। हमको पीडा मत दे। हे यजमान ! मैं

शिवोवोनामांसिस्वधिंतिस्तेपितानमंस्तेऽअस्तुमामांहिंर्ठसीः॥ निवंर्त्तयाम्म्यायुंषेन्नाद्यांयप्प्रजनंनायरायस्प्पोषांयसुप्प्रजा स्त्वायंसुवीर्य्यांय ॥ ८ ॥ इति रुद्रे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

तुमको जीवनके निमित्त अन्नभक्षणके निमित्त, सन्तानोत्पत्ति, धनपुष्टि, सुन्दर सन्तान, उत्तम पराक्रमके निमित्त मुंडन करता हूं। क्षौरकर्म करानेसे मनुष्य शुद्ध होकर परमात्माके जपादिक करनेका अधिकारी होता है ॥ ८ ॥ इति षडंगरुद्रीकी भाषामें छठा अध्याय समाप्त हुआ ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उग्र, भीम, ध्वान्त, धुनी, सास, ह्वान, अभियुग्वा और विक्षिपनामवाले मरुतोंके लिये श्रेष्ठ होम होय ॥ १ ॥ (जबतक प्रारब्धकी समाप्ति हो तबतक शरीरको देवरूप करनेका मंत्र) आत्मा अग्निको

हरिः ॐ उग्रश्च भीमश्चध्वान्तश्चधुनिश्च ॥ सासह्वाँश्चाभियुग्वाचविक्षिपः स्वाहा ॥ १ ॥ अग्निᳬहृदयेनाशनिᳬहृदयाग्रेणपशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेन भवंय्यक्ना ॥ शर्वम्मतस्नाभ्यामीशानम्मन्युनां महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रन्देवंवनिष्ठुनांवसिष्ठहनुः शिङ्गीनिकोश्याभ्याम् ॥ २ ॥

हृदयसे युक्त करता हूं, जीवको हृदयाग्रसे युक्त करता हूं, पशुपतिको सम्पूर्ण हृदयसे युक्त करता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हूं, भवको कालखण्डसे युक्त करता हूं, शर्वको मृत्स्ना नाम हृदयसे युक्त करता हूं, ईशानदेवताको क्रोधसे युक्त करता हूं, महादेवको पार्श्वस्थसम्बन्धी मांससे युक्त करता हूं, उग्रदेवताको स्थूल आन्त्रसे युक्त करता हूं, शिङ्गिनामवाले देवताओंको हृदयकोशस्थ मांसके पिंडोंसे युक्त करता हूं अर्थात् सम्पूर्ण शरीरमें देवताओंको आविर्भाव करके स्वयं कर्त्तव्यरहित होता है॥ २ ॥ उग्रदेवताको

उग्ग्रँल्लोहितेन मित्त्रꣳ सौव्व्रत्येन रुद्द्रन्दौर्व्वत्येनेन्द्द्रम्प्प्रक्क्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान्प्प्रमुदा ॥ भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्द्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ३ ॥

रुधिरसे युक्त करता हूं, मित्रदेवताको शुभगति कर्म अनुष्ठानादिकोंसे युक्त करता हूं, रुद्रदेवताको शिष्यादिक ताडनरूप कर्मानुष्ठानसे युक्त करता हूं, इन्द्रदेवको अनेक क्रीडासे युक्त करता हूं, मरुद्देवताओंको बलसे और साध्यदेवताओंको प्रसन्नतासे युक्त करता हूं, कण्ठका मांस भवदेवताका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थान है, पार्श्वके मध्यका मांस रुद्रका स्थान है, कालखण्ड महादेवका स्थान है, स्थूलान्त्र शर्वदेवताका स्थान है, हृदयकी आच्छादन करनेवाली आंत पशुपतिका स्थान है, यही मंत्रकवच है। अपने अपने

लोमभ्युःस्वाहा ॥ लोमभ्युःस्वाहांत्वचेस्वाहांत्वचेस्वाहा
लोहितायुस्वाहालोहितायुस्स्वाहामेदोभ्युःस्वाहामेदोभ्यु
ःस्वाहां ॥ मांसेभ्युःस्वाहांमांसेभ्युःस्वाहास्नावभ्युः
स्वाहास्नावभ्युःस्वाहास्थभ्युःस्वाहास्थभ्युःस्वाहांम
ज्जभ्युःस्वाहांमज्जभ्युःस्वाहा ॥ रेतसेस्स्वाहांपायवेस्वाहां॥४॥

स्थानोंमें स्थित देवता शरीरकी रक्षा करें॥३॥आत्मा अभोक्ता है, भोग देहके हैं,इसी कारण भोगोंके देहके अर्पण करा है, समष्टिलोमोंके निमित्त श्रेष्ठ होम हो, व्यष्टिलोमोंके निमित्त भोग प्राप्त हों। समष्टित्वंचाके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लिये श्रेष्ठ होम हो, व्यष्टित्वचाके लिये भोग समर्पण हों। समष्टिरुधिरके लिये श्रेष्ठ होम और व्यष्टिरुधिरके लिये भोग समर्पण हों। समष्टिमेदाके अर्थ होम हो, व्यष्टिमेदाके अर्थ श्रेष्ठ भोग प्राप्त हों। समष्टिमांसोंके निमित्त होम हो, व्यष्टिमांसोंके निमित्त भोग प्राप्त हों। समष्टिनसोंके लिये श्रेष्ठ होम हो, महा. व्यष्टिनसोंके

आयुासायुस्स्वाहां ॥ प्रायुासायुस्स्वाहांसंध्युासायुस्स्वाहां
व्रियुासायुस्वाहोंध्युासायुस्वाहां॥ शुचेस्वाहुाशोचंतुस्वाहुाशो
चंमानायुस्वाहुाशोकांयुस्वाहां ॥ ५ ॥

निमित्त भोग प्राप्त हों। समष्टिअस्थियोंके निमित्त होम हो और व्यष्टिअस्थियोंके लिये भोग समर्पण हों। समष्टिमज्जाके निमित्त होम हो, व्यष्टिमज्जाओंके निमित्त भोग प्राप्त हों। वीर्यके निमित्त होम हो, वायुइन्द्रियके निमित्त भोग समर्पण हों ॥ ४ ॥ देहपरिश्रमके निमित्त भोग प्राप्त हों, इन्द्रियपरिश्रमके

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निमित्त भोग प्राप्त हों। मानसपरिश्रमके लिये भोग और बुद्धिपरिश्रमके लियेभी प्राप्त हों। प्राणपरिश्रम-के निमित्त भोग प्राप्त हो, शोकके निमित्त भोग प्राप्त हो, शोककारीके निमित्त भोग प्राप्त हो, शोचमा-नके लिये भोग प्राप्त हो, शोक पुरुषके लियेभी भोग प्राप्त हो ॥ ५ ॥ वर्णाश्रमके फल देनेवाले तपके

तपंसेस्स्वाहातप्प्यंतेस्स्वाहा तप्प्यंमानायस्स्वाहां तप्ताय स्वाहां घुम्र्मायस्स्वाहां ॥ निष्कृंत्त्यैस्स्वाहाप्प्रायंश्चित्त्यै स्स्वाहांभेषजायस्स्वाहां ॥ ६ ॥

निमित्त भोग समर्पण हो, तपकर्त्ताके निमित्त भोग समर्पण हो, तप्यमानके लिये भोग समर्पण हो, तप्त के निमित्त भोग समर्पण हो, व्यष्टिसमष्टिसूर्यके लिये भोग प्राप्त हो, निष्कृतिके निमित्त भोग प्राप्त हो, प्रायश्चित्तके निमित्त भोग प्राप्त हो, औषधियोंके लिये भोग समर्पण हो ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यमके निमित्त श्रेष्ठ होम हो, भोग प्राप्त हो, अनन्तके लिये भोग प्राप्त हो, मृत्युके लिये भोग प्राप्त हो, विराट्पुरुषनके निमित्त भोग प्राप्त हो, ब्रह्मके निमित्त भोग प्राप्त हो, सम्पूर्ण देवताओंके निमित्त भोग प्राप्त हो, पृथ्वी और स्वर्गके निमित्त भोग प्राप्त हो अर्थात् आत्मा अकर्ता और अभोक्ता है इसको न तौ

यमायुस्स्वाहान्तंकायुस्वाहांमृत्यवेुस्वाहां ॥ ब्रह्मंणेस्वाहांब्र ह्महुत्यायैुस्वाहाविश्श्वेभ्योदेुवेभ्युःस्वाहाुद्यावांपृथिवीभ्या ॐस्वाहां ॥ ७ ॥ इति रुद्रे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

कुछ भोग लगते हैं और न कुछ कर्म लगते हैं यह आत्मा तौ निर्विकार है ॥ ७ ॥ इति षडङ्गरुद्रीकी भाषामें सप्तम अध्याय समाप्त हुआ ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरा अन्न और मेरा द्रव्य योगयज्ञसे आत्माको प्राप्त हो और मुझे अन्नदान करनेकी प्रेरणा करो और खाओ । मेरी शुद्धि और मेरा सात्विकभाव, मेरा पान और संकल्प, मेरा उदात्तं अनुदात्त स्वरित वर्णों-

हरिः ॐ वाजंश्च ॥ मेप्प्रसवंश्चमेप्प्रयंतिश्चमेप्प्रसितिश्चमेधी
तिश्चंमेक्रतुंश्चमेस्वरंश्चमेश्लोकंश्चमेश्रवश्चंमेश्रुति
श्चमेज्ज्योतिश्चमेस्वःश्चमेयज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ १ ॥

के उच्चारणका प्रयत्न भेद और मेरा मंत्र मेरी श्रवणइन्द्रिय और मेरा ब्राह्मणग्रंथ और आत्माका प्रतिबिम्ब और मेरा आत्मा यज्ञसे प्राप्त हो ॥ १ ॥

१ जो वर्ण ऊंचे स्वरसे बोला जाय उसको उदात्त और जो नीचे स्वरसे बोला जाय उसे अनुदात्त और जिसमें उदात्त और अनुदात्त दोनों धर्म समान हों (जो मध्यमस्वरसे बोला जाय) उसे स्वरित कहते हैं ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मेरा प्राण, मेरा अपान और मेरा व्यान और मेरा शेषप्राणोंका समूह, मेरा चित्त और नहीं पढना और मेरी वाक् इन्द्रिय, मेरा मन और मेरी चक्षुइन्द्रिय तथा मेरी श्रोत्रइन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रियकी निपुणता

प्राणश्श्च॑ ॥ मेपानश्श्च॑मेव्व्यानश्श्चमेसुंश्श्चमेचित्तञ्च॑मुऽआधीत
ञ्चमेव्वाक्चं॑मेमनं॑श्श्चमेचक्षुंश्श्चमेश्श्रोत्रं॑ञ्चमेदक्षश्श्चमेबलंञ्चमे
यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ २ ॥ ओजंश्श्चमेसहंश्श्चमऽआत्माचं॑मेत
नूश्श्च॑मेशर्म्मंचमेव्वर्म्मंचमेङ्गांनिचमेस्थींनिचमेपरू॑ᳪंषिचमे
शरीराणिचमऽआयुंश्श्चमेजराचं॑मेयज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ३ ॥

तथा कर्मेन्द्रियकी कुशलताभी यज्ञसे प्राप्त हों ॥२॥ मेरा प्राणबल तथा देहबल, ईश्वर, शरीरसुख और

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कवच, करादि अवयव और शरीरकी हड्डियां और अंगुली आदिक पर्व, स्थूल तथा सूक्ष्म कारणशरीर, जीवन और वृद्धावस्थाके अन्तपर्यन्त आयुभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ ३ ॥ मेरा ज्येष्ठपन और स्वामित्व तथा धर्मकी रक्षासम्बन्धी क्रोध और पुत्र तथा सेवक आदिके अपराधमें क्रोध और प्रमाण न करन

ज्यैष्ठ्यंञ्चमऽआधिपत्त्यञ्चमेमन्युश्चमेभामश्चमेमश्चमे
म्भश्चमेजेमाचमेमहिमाचमेवरिमाचमेप्प्रथिमाचमेवर्षिमा
चमेद्राघिमाचमेवृद्धञ्चमेवृद्धिश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ४ ॥

शीतल और मीठा जल, जयकी शक्ति महत्त्व तथा विशालता, घर और क्षेत्रादिकोंका विस्तार चिरकालतक जीवन कुलकी परम्परा, अन्न धन आदिकी वृद्धि तथा विद्यादि गुणोंकी उत्तमताभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरा सत्य तथा परलोकका विश्वास और गौ आदिक पशु, सुवर्ण आदिक द्रव्य, स्थावर वस्तु दीप्ति और आत्मामें विहार तथा आत्माका सुख पुत्र और शिष्योंका समूह, अगाडीको उत्पन्न होनेवाले

नमस्ते

सत्यंञ्चमेश्रद्धाचंमेजगंच्चमेधनंञ्चमेविश्वंञ्चमेमहंश्चमेक्री
डाचंमेमोदंश्चमेजातंञ्चमेजनिष्यमाणंञ्चमेसूक्तंञ्चमेसुकृ
तंञ्चमेयज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ५ ॥

पुत्र शिष्य ऋग्वेदके मंत्रोंका समूह अथवा महावाक्य, ऋग्वेदका पाठ करनेके ज्ञानका फल, यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ ५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरे यज्ञादिक कर्म, मोक्ष वा स्वर्गादिक उसका फल, देह और संसारके रोगोंका नाश और साधारण व्याधियोंकाभी नहीं होना, व्याधियोंकी नाश करनेवाली औषधियें, बहुत दिनोंपर्यन्तकी आयुर्बल तथा शत्रुओंका नाश और डरका न होना, आनन्द, शयनका योग्य (लायक) होना, संध्यासहित

ऋतञ्चमेमृतञ्चमेयुक्ष्मञ्चमेनामयच्चमेजीवातुश्चमेदीर्घायुत्व ञ्चमेनमित्रञ्चमेभयञ्चमेसुखञ्चमेशयनञ्चमेसूखाश्चमेसुदिनं ञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ६ ॥

शुभस्थान, शुभ प्रातःकालभी, यज्ञ दान वेदपाठ आदिकोंसे संयुक्त होनेके कारण श्रेष्ठ दिनभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ ६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरे गुरु आदिक शिक्षा करनेवाले, पिता आदि पोषण करनेवाले, इस समय विद्यमान धनकी रक्षा करनेका सामर्थ्य और मेरा आपत्तिकालमें चित्तका स्थिर रहना तथा विश्वनामवाला देह और निरन्तर आनन्द उत्पन्न करनेवाला मेरा व्यापार, वेद तथा शास्त्रादिकोंका ज्ञान और विज्ञानकी शक्ति तथा

यु॒न्ता चं॑ ॥ मे॒ध॒र्त्ता च॑ मे॒ क्षेमं॑श्च मे॒ धृति॑श्च मे॒ विश्वं॑ च मे॒

मह॑श्च मे॒ सं॒विच्च॑ मे॒ ज्ञात्रं॑ च मे॒ सूश्च॑ मे प्र॒सूश्च॑ मे॒ सीरं॑ च मे॒ ल॒

यं॑श्च मे य॒ज्ञेन॑ कल्पन्ताम् ॥ ७ ॥

पुत्र और शिष्य आदिकोंकी प्रेरणाकी शक्ति और पुत्रादिकोंकी उत्पन्न करनेकी सामर्थ्य और फलादिके द्वारा धान्यकी सिद्धि, मेरी खेतीके उपद्रवोंका अभाव यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ ७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरे शरीरका सुख तथा परलोकका सुख और प्रेम उत्पन्न करनेवाली वस्तु, अनुकूल यत्नके द्वारा साधन करनेलायक पदार्थ, शास्त्रोक्त विषयभोगसे पैदा हुआ सुख, चित्तको सावधान करनेवाले बन्धुओंका

शंचमेमयश्चमेप्रियञ्चमेनुकामश्चमेकामश्चमेसौमनस
श्चमेभगश्चमेद्रविणञ्चमेभद्रञ्चमेश्रेयश्चमेवसीयश्चमेयश
श्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ८ ॥ नमस्ते

समूह और मेरा सौभाग्य तथा धन इस लोकका मेरा कल्याण तथा परलोकका कल्याण रहनेलायक धनसे भरे हुए घर आदिक और तीर्थभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हों ॥ ८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरा अन्न और मेरी मनोहर सच्ची वाणी, दुग्ध तथा दुग्धका सार, घृत, मेरा मधु और बान्धवोंके साथ भोजन तथा बान्धवोंके साथ पान करना मेरे धान्यकी सिद्धि और खेतीके अनुकूल वर्षा, जयकी सामर्थ्य

ऊर्क्च॑ ॥ मेसूनृताचमेपयश्चमेरसश्चमेघृतञ्चमेमधुचमेसग्धिश्चमेसपीतिश्चमेकृषिश्चमेवृष्टिश्चमेजैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्॥ ९ ॥रयिश्च॑ ॥ मेरायश्चमेपुष्टञ्चमेपुष्टिश्चमेविभुचमेप्रभुचमेपूर्णञ्चमेपूर्णतरञ्चमेकुयवञ्चमेक्षितञ्चमेन्नञ्चमेक्षुच्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १० ॥

आमके वृक्षादिकोंकी उत्पत्ति यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ ९ ॥ मेरा सुवर्ण और मेरी हीरे मोती आदिक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मणियें, धनकी पुष्टि तथा शरीरकी पुष्टि, व्याप्तिकी शक्ति, मेरा ऐश्वर्य और मेरे धनपुत्रादिकोंकी वृद्धि तथा हाथी घोडे आदिकोंकी बाहुल्यता और निकृष्ट धान्य और नाशरहित धान्यादिक, ओदन आदि अन्न; खाये हुए अन्नका पचनाभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हो॥१०॥मेरा धन तथा आगेको प्राप्त होनेवाला मेरा

वित्तञ्चं ॥ मेवेद्यञ्चमेभूतञ्चंमेभविष्यच्चंमेसुगञ्चंमेसुपथ्यञ्च
मऽऋद्धञ्चंमऽऋद्धिश्चमेक्लृप्तञ्चंमेक्लृप्तिश्चमेमतिश्चंमेसुम
तिश्चंमेयज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ११ ॥

धन, क्षेत्र आदि पूर्वसिद्धि तथा अगाडीको प्राप्त होनेवाले क्षेत्रादिक, सुखसे मिलनेवाला देश, श्रेष्ठ हित और बहुतायतसे यज्ञका फल, यज्ञादिकोंकी समृद्धि, कार्योंमें शक्तिवाले अर्थात् धनादिक, अपने कार्यकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सामर्थ्य तथा पदार्थंही मात्रका निश्चय और कठिन कार्यादिकोंका निश्चयभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥११॥

मेरे चावल तथा मेरे जौ और उडद, तिल तथा मूंग, चने, कँगनी, चना तथा श्यामका समेके चावल

व्रीहयश्श्चमे यवाश्श्चमे माषाश्श्चमे तिलाश्श्चमे मुद्गाश्श्चमे खल्वाश्श्चमे प्रियङ्गवश्श्चमेऽणवश्श्चमे श्यामाकाश्श्चमे नीवाराश्श्चमे गोधूमाश्श्चमे मसूराश्श्चमे यज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १२ ॥

नमस्ते

आदिक मुनिअन्न और नीवार (पसाईंके चावल) आदि मुनिअन्न और गेहूं तथा मसूरभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ १२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरे पाषाण तथा श्रेष्ठ मृत्तिका और पर्वत, मन्दराचल आदि बडे २ पर्वत, रेता और वनस्पतियें, सुवर्ण

अश्म्मा च॥ मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यञ्च मेयश्च मे श्यामञ्च मे लोहञ्च मे सीसञ्च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥१३॥ अग्निश्च॥ मऽआपश्च मे वीरुधश्च मऽओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मे कृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशवऽआरण्याश्च मे वित्तञ्च मे वित्तिश्च मे भूतञ्च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्॥ १४॥

अथवा चांदी और लोहा, तांबा, कांसी, पीतल, सीसा, रांगभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हों ॥१३॥ मेरा पार्थिव

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्नि, मेरा जल तथा गुल्म, औषधियें, जोतने बोने आदिसे उत्पन्न होनेवाली औषधियें, स्वयं उत्पन्न होनेवाले नीवार गवेधुका आदिक, गाय, भैंस, घोडा, भेड, बकरी आदि ग्रामीण पशु, मृग हाथी आदि जंगली पशु, पहला हुआ लाभ, आगेको होनेवाला लाभ पुत्रादिकोंका वर्त्तमान लाभ

वसुंश्च ॥ मेव्वसुतिश्श्चंमेकर्म्मंचमेशाक्तिंश्श्चमेत्र्थंश्श्चमऽएमंश्श्चमऽइत्याचंमेगतिंश्श्चमेयज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ १५ ॥ नमस्ते

ऐश्वर्य यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ १४॥ मेरा धन तथा मेरा रहनेका घर, अग्निहोत्रादिक तथा उसके करनेकी शक्ति, मनोभिलषित पदार्थ प्राप्तिके योग्य द्रव्य, अपने इष्टकी प्राप्तिका उपाय तथा निज इष्टकी प्राप्तिभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ १५ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मेरी अग्नि तथा इन्द्र, मेरा सोम और इन्द्र, तथा सविता और इन्द्र, मेरी सरस्वती तथा इन्द्र, पूषा और

अग्निश्च ॥ मऽइन्द्रश्चमेसोमश्चमऽइन्द्रश्चमेसविताचमऽइ
न्द्रश्चमेसरस्वतीचमऽइन्द्रश्चमेपूषाचमऽइन्द्रश्चमेबृहस्प
तिश्चमऽइन्द्रश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १६ ॥ मित्रश्च ॥ मऽ
इन्द्रश्चमेवरुणश्चमऽइन्द्रश्चमेधाताचमऽइन्द्रश्चमेत्वष्टा
चमऽइन्द्रश्चमेमरुतश्चमऽइन्द्रश्चमेविश्वेचमेदेवाऽइन्द्रश्च
मेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १७ ॥

इन्द्र तथा बृहस्पति और इन्द्रभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हों ॥१६॥ मेरे मित्र और इन्द्र, मेरे वरुण और इन्द्र,

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरे ब्रह्मा और इन्द्रदेवता, त्वष्टा और इन्द्र तथा मरुत और इन्द्रदेवता, विश्वेदेवा तथा इन्द्र यज्ञसे प्राप्त हो ॥ १७ ॥ मेरी पृथ्वी और इन्द्रदेवता, अंतरिक्ष और इंद्रदेवता तथा मेरा स्वर्ग और इन्द्र-

पृथिवी च॥ मुऽइन्द्रꣳश्च मेऽन्तरिक्षञ्च मुऽइन्द्रꣳश्च मे द्यौश्च मुऽइन्द्रꣳश्च मे समाꣳश्च मुऽइन्द्रꣳश्च मे नक्षत्राणि च मुऽइन्द्रश्च मे दिशꣳश्च मुऽइन्द्रꣳश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ १८ ॥ नमस्ते

देवता, वर्षाके अधिपति देवता और इन्द्रदेवता तथा क्षत्र और इन्द्रदेवता तथा दिशा और इन्द्रदेवता यज्ञके द्वारा प्राप्त हों ॥ १८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरा अंशु और रश्मिनामवाला ग्रह, मेरा अदाभ्य नामक ग्रह तथा निग्राह्य ग्रह और मेरा उपांशु ग्रह तथा मेरा अन्तर्याम नामवाला ग्रह और ऐन्द्रवायव ग्रह तथा मैत्रावरुण ग्रह और मेरा आश्विन ग्रह,

अꣳशुश्चं ॥ मेरश्मिश्चमेदाभ्यश्चमेधिपतिश्चमऽ
उपाꣳशुश्चंमेन्तर्य्यामश्चंमऽऐन्द्रवायवश्चंमेमैत्रा
वरुणश्चंमऽआश्विनश्चंमेप्रतिप्रस्थानंश्चमे शुक्र
श्चंमे मन्थीचंमे यज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ १९ ॥

निग्राह्य ग्रह, शुक्रग्रह तथा मन्थीग्रहभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ १९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे परमात्मन्! मेरा आग्रायणनामवाला ग्रह और वैश्वदेव, ध्रुव और वैश्वानर तथा ऐन्द्राग्नि और महावैश्वदेव तथा मरुत्वतीय और मेरा निष्कैवल्य तथा सावित्र और सारस्वत, पात्नीवत ग्रह, हारियो-

आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च मऽ
ऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे निष्कैव
ल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्नीवतश्च मे हारि
योजनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २० ॥

जन ग्रह और यह पूर्वोक्त सम्पूर्ण ग्रह यज्ञके द्वारा प्राप्त हों ॥ २० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेरा स्रुक् (स्रुवा) पात्र तथा चमसपात्र, वायव्यपात्र और द्रोणकलश तथा ग्रावाण दोनों काष्ठफलक, पूतभृतनामक सोमपात्र तथा आहवनीय सोमपात्र, वेदी और कुशा, अवभृथ और शम्युवाकनामवाला

स्रुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकल
शश्च मे ग्रावाणश्च मेऽधिषवणे च मे पूतभृच्च मऽआ
धवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगा
कारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २१ ॥ नमस्ते

पात्र ये सम्पूर्ण यज्ञके द्वारा प्राप्त हों ॥ २१ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे परमेश्वर ! मेरा इकट्ठा करा हुआ अग्नि अथवा अग्निष्टोम, घर्मनाम प्रवर्ग, यज्ञसम्बन्धी पुरोडाश तथा सूर्यसंबन्धी चरु, गवामयन तथा हयमेध और पृथ्वीदेवता, दितिदेवता और अदितिदेवता, स्वर्ग तथा

अग्निश्च मे घर्मश्च मेऽर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २२ ॥ व्रतं च म ऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च मेऽहोरात्रे ऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २३ ॥

विराट्पुरुषके अवयव, सब प्रकारकी शक्ति, सम्पूर्ण दिशाभी यज्ञके द्वारा प्राप्त हों ॥ २२ ॥ मेरा व्रत वा नियम, वसन्त आदि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकांच।।मेतिस्रश्श्चमेतिस्रश्श्चमेपञ्चचमेपञ्चचमेसप्तचमेसप्तचमेनवं
चमेनवंचमऽएकादशचमऽएकादशचमेत्रयोदशचमेत्रयोदशचमेपञ्च
दशचमेपञ्चदशचमे सप्तदशचमेसप्तदशचमे नवदशचमे नवदशचम
ऽएकविꣳशतिश्श्चमऽएकविꣳशतिश्श्च मेत्रयोविꣳशतिश्श्चमेत्रयो
विꣳशतिश्श्चमेपञ्चविꣳशतिश्श्चमेपञ्चविꣳशतिश्श्चमेसप्तविꣳशति
श्श्चमेसप्तविꣳशतिश्श्चमे नवविꣳशतिश्श्चमे नवविꣳशतिश्श्चमऽएकं
त्रिꣳशच्चमऽएकंत्रिꣳशच्चमे त्रयस्त्रिꣳशच्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्।।२४।।

नमस्ते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऋतुएं तथा नित्यकर्म, प्रभवादिक वर्ष, दिन और रात, जंघा जानु आदि अंग, यज्ञके द्वारा प्राप्त हों ॥ २३ ॥ हे सर्वव्यापक ! मेरी शक्ति और मेरे समष्टिप्राण तथा व्यष्टिप्राण, पंचाक्षर ॐकार और पांचों अक्षरोंके देवता तथा भूआदिक सप्तलोक और सप्त व्याहृती, नौ प्रकारकी भक्ति तथा उसके साधन, ग्यारह रुद्र और मनकरके सहित इन्द्रियें तथा संवत्सर महीने और समष्टि मन तथा व्यष्टि मन, ईश्वर तथा आत्मा, तप और तपका फल, समष्टिसूर्य तथा मानससूर्य, द्रव्य और योगरूपी धन, समष्टिरूप आत्माका प्रतिबिम्ब तथा व्यष्टिरूप आत्माका प्रतिबिम्ब, तेज और मेरा ब्रह्मतेज, भक्ति तथा ज्ञानसंपन्न दैवसम्बंधी सम्पत्ति और उसके साधन यज्ञ तथा यज्ञके साधन प्रतिष्ठा तथा प्रतिष्ठाके साधनादिक सब यज्ञके द्वारा कल्पना करे जांय अर्थात् प्राप्त हों ॥ २४ ॥

१ ये अयुग्मस्तोम होमके मंत्र हैं । एक समिधा ले दूसरीको छोड तीसरीको ग्रहण करं दोबार अधिक आदरके निमित्त कहा है । इस हवनसे सब कामनाकी प्राप्ति होती है ९ । ३ । ३। २ श. श्रुतिमें लिखा है 'चतरश्च मे' यह युग्मस्तोम है इससे स्वर्गप्राप्ति होती है ९ । ३ । ३ । ५ श्रुति श० ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मेरी चारों युगोंवाली पृथ्वी तथा दिशा और दिक्पाल, बारह अवयव (महीने) वाला वर्ष महीने, सोलह

चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षो
डश च मे विꣳशतिश्च मे विꣳशतिश्च मे चतुर्विꣳशतिश्च मे चतु
र्विꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मेऽष्टाविꣳशतिश्च मे द्वात्रिꣳश
च्च मे द्वात्रिꣳशच्च मे षड्त्रिꣳशच्च मे षड्त्रिꣳशच्च मे चत्वारिꣳशच्च मे
चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मे चतुश्चत्वारिꣳशच्च मे
ऽष्टाचत्वारिꣳशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २५ ॥ नमस्ते

११

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संस्कार तथा उनके साधन और वर्णाश्रम धर्म अष्टाङ्गयोग तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा इन धर्मादिकोंके साधन, गायत्री, ब्रह्म तथा व्यवहारचक्षु और ज्ञानचक्षु, वाणी तथा महावाणी, ब्रह्मलोक और ब्रह्मभाव, शिवलोक तथा शिवभाव, विष्णुलोक तथा विष्णुभाव और महानारायणभी यज्ञके द्वारा

त्र्यविश्श्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्श्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्श्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्य्यवाट् च मे तुर्य्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ २६ ॥

प्राप्त हों ॥ २५ ॥ डेढ वर्षकी उमरवाला मेरा बछडा तथा उतनीही आयुवाली गौ अर्थात् बछिया तथा दो वर्षका बछडा और वैसीही गाय और ढाई वर्षका बछडा वैसीही गौ तथा तीन वर्षका बछडा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

और वैसीही गाय तथा साढे तीन वर्षका बैल और साडे तीनही वर्षकी गौ यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ २६ ॥
हे परमात्मन् ! मेरा चार वर्षका बैल और चारही वर्षकी गौ, उक्षा (विजार) और वन्ध्या गौ

पुष्ठवाट्चं ॥ मेपष्ठौहीचंमऽउुक्षाचंमेव्वुशाचंमऽऋषभश्श्चंमेव्वु
हच्चंमेनड्वाँश्श्चंमेधेनुश्श्चंमेयुज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ २७ ॥ नमस्ते

(बैल गाय) अतितरुण वृषभ और मेरी गर्भ धारण करनेवाली गौ, गाडीके खैंचनेमें सामर्थ्यवाला
वृषभ तथा नवीन व्याही हुई गौ यज्ञके द्वारा प्राप्त हो ॥ २७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रजापतिके अवयवस्वरूप चैत्रमासाभिमानी देवताके निमित्त श्रेष्ठ होम हो तथा वैशाखके लिये श्रेष्ठ

व्राजा॑य॒स्वाहा॑ ॥ प्प्रसु॒वाय॒स्वाहा॑पि॒जाय॒स्वाहा॒क्क्रत॑वे॒स्वाहा॒व्व
सं॑वे॒स्वाहा॑ह॒र्प्प॑त॑ये॒स्वाहा॒न्ह्हे॑मु॒ग्ग्धाय॒स्वाहा॑मु॒ग्ग्धाय॑व्वैनꣳशि
नाय॒स्वाहा॑व्विन॒ꣳशिन॑ऽआन्त्याय॒नाय॒स्वाहान्त्या॑यभौ॒व॒नाय॒
स्वाहा॒भुव॑नस्य॒पत॑ये॒स्वाहा   धि॑पतये॒स्वाहा॑प्प्र॒जाप॑तये॒स्वा
हा॑ ॥ इ॒यन्ते॒राण्म्मि॒त्राय॑यं॒युन्ता॑सि॒यम॑नऽऊ॒र्ज्जे॑त्वा॒वृष्ट्यै॑त्वा॒प्प्र
जाना॒न्त्वा॒धि॑पत्याय ॥ २८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होम होय, तिसी प्रकार ज्येष्ठके निमित्त श्रेष्ठ होम हो, आषाढके लिये श्रेष्ठ होम और श्रावणके निमित्त श्रेष्ठ होम हो, भाद्रपदके अर्थ श्रेष्ठ होम होय, आश्विन (क्वांर) मासके निमित्त श्रेष्ठ होम हो तथा कार्तिकमासाभिमानी देवताके लिये श्रेष्ठ होम हो, मार्गशीर्ष (अगहन) मासके अर्थ श्रेष्ठ होम हो, पौषाभिमानी देवताके निमित्त श्रेष्ठ होम हो, माघमासाभिमानी देवताके अर्थ श्रेष्ठ होम हो, फाल्गुनमासाभिमानी देवताके लिये श्रेष्ठ होम हो, बारह महीनोंके अधिष्ठाता देवताओंके निमित्त श्रेष्ठ होम होय, हे अग्ने ! यह यज्ञशाला आपका राज्यस्थान है, तुम अग्निष्टोमादि कर्मोंमें सबके शिक्षा करनेवाले हो और यजमानकेभी प्रेरणा करनेवाले हो, श्रेष्ठ अन्न तथा रसके निमित्त तुमको मैं सींचता हूं तथा वर्षाके लिये सींचता हूं तथा प्रजाके प्रभुत्वकी प्राप्तिके निमित्त मैं तुम्हें सींचता हूं ॥ २८ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आयुर्य्यज्ञेनंकल्पताम्प्प्राणोयज्ञेनं कल्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेनं
कल्पताᳪँश्श्रोत्रंय्यज्ञेनंकल्पतांव्वाग्ग्यज्ञेनं कल्पताम्मनोय्य
ज्ञेनंकल्पतामात्त्मायज्ञेनंकल्पताम्ब्रह्मायज्ञेनंकल्पताञ्ज्यो
तिर्य्यज्ञेनं कल्पताᳪँस्वर्य्यज्ञेनंकल्पताम्पृष्ठंय्यज्ञेनं कल्प
तांय्यज्ञोयज्ञेनं कल्पताम् ॥ स्तोमश्श्चयजुश्श्चऽऋक्चसामं
चबृहच्चरथन्तरञ्च ॥ स्वर्द्देवाऽअगन्मामृताऽअभूमप्प्रजापते
ᳪप्प्रजाऽअभूमव्वेट्स्वाहा॥२९॥ ॥ इतिरुद्रेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यज्ञसे आयु प्राप्त हो, यज्ञके द्वारा प्राण प्राप्त हों तथा यज्ञके द्वारा नेत्र प्राप्त हों तथा यज्ञसे श्रोत्र प्राप्त हों और तथा यज्ञसे वाणी प्राप्त हो और यज्ञसे मन प्राप्त हो, यज्ञके द्वारा इन्द्रिय तथा मनसे संयुक्त भोग करनेवाला शरीर प्राप्त हो; यज्ञसे वेद प्राप्त हो, यज्ञसे स्वयं प्रकाशमान परमात्मा प्राप्त हो तथा यज्ञसे स्वर्ग प्राप्त हो, यज्ञहीसे ब्रह्मलोक प्राप्त हो, यज्ञसेही यज्ञपुरुष

॥ हरिः ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपंद्येमनोयजुःप्रपंद्येसामंप्प्राणम्प्रपं
द्येचक्षुःश्रोत्रंप्रपंद्ये ॥ व्वागोजः सुहौजोमयिंप्राणापानौ ॥ १ ॥

प्राप्त हो तथा यज्ञहीसे स्तोम यजुर्वेद ऋग्वेद और सामवेद तथा बृहत्साम तथा रथन्तरसाम प्राप्त हो। हे देवताओ ! हम स्वर्गको जांय, देवता होंय, साकार अथवा निराकार परब्रह्मके पार्षद हो तथा श्रेष्ठ होम हो ॥ २९ ॥

इति षडङ्गरुद्रीकी भाषामें अष्टम अध्याय समाप्त हुआ ॥ ८ ॥

ऋग्रूप वाणीकी शरण प्राप्त होता हूं, यजुरूप मनकी शरणको प्राप्त होता हूं, प्राणरूप सामकी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शरणको प्राप्त होता हूं, चक्षु और कर्ण इन्द्रियकी शरणको प्राप्त होता हूं। वाणीका बल, देहका बल, प्राण अपान मुझमें स्थित हों ॥ १ ॥ मेरी चक्षुइन्द्रियमें जो न्यूनता है हृदय वा मनकी जो न्यूनता है, हे परमात्मन्! हे परब्रह्म! तुम उस मेरी न्यूनताको दूर करो। हमारे सुखरूप हो जाओ जो सच्चिदानन्द

यन्मे॥ छिद्रञ्चक्षुषोहृदयस्यमनसोवातितृण्णम्बृहस्पतिर्म्मेतद्दधा
तु॥ शन्नोभवतुभुवनस्ययस्पतिः ॥२॥ भूर्भुवःस्वः॥तत्सवि
तुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि ॥ धियोयोनःप्रचोदयात्॥ ३ ॥

सारे जगत्का स्वामी है ॥ २ ॥ प्रकाशमान उस सवितादेव वा प्रेरणा करनेवाले अन्तर्यामी विज्ञानानन्द स्वभाव हिरण्यगर्भोपाधि विच्छिन्न सूर्यान्तरवर्ती पुरुष ब्रह्मका, सबसे प्रार्थनीय सब संसारके पाप दूर करनेमें समर्थ सत्यस्वरूप ज्ञानस्वरूप आनंदस्वरूप वेदान्तप्रतिपाद्य तेजका हम ध्यान करते हैं। वह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सविता देव हमारी बुद्धियोंको कर्मानुष्ठानके लिये प्रेरणा करता है उससे हम अपनी आत्मामें ध्यान करते हैं ॥ ३ ॥ सब ऐश्वर्यसे वर्द्धमान आश्चर्यरूप सच्चिदानन्द परमेश्वर इस तृप्ति वा प्रीणन तथा किस वर्तमान यज्ञादि क्रियासे हम भक्तोंका सहायक होता है ॥ ४ ॥ हे परमात्मन् इन्द्र ! सोमरूप अन्नका

कयां न श्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा ॥ कयाश
चिष्ठया वृता ॥ ४ ॥ कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो म
त्सदन्धसः ॥ दृढाचिदारुजे वसु ॥ ५ ॥ अभीषुणः
सखीनामविता जरितॄणाम् ॥ शतम्भवास्यूतिभिः ॥ ६ ॥

कौन अंश मदजनक हवियोंमें श्रेष्ठ होकर तुमको प्रसन्न करता है आपकी जिस तृप्तिमें दृढ और जडरूप कारण शरीरको खण्डित करूं ॥ ५ ॥ हे विष्णुरूप परमात्मन् ! स्तुति करनेवाले हम भक्तोंके रक्षक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुम हमारी रक्षा करनेको अनेकों अवतार धारण करते हो ॥ ६ ॥ हे धर्म अर्थ काम मोक्षके देनेवाले परमेश्वर ! तुम त्रिदेवरूप लीलाके द्वारा हमको आनन्द देते हो इसी कारण त्रिदेवरूपसे स्तुति करने-वाले भक्तोंको मनवांछित कामना दो ॥ ७ ॥ सबका स्वामी परमेश्वरही प्रकाश करता है वह हमारे

कयात्वन्नंऽऊत्याभिप्प्रमंन्दसेवृषन् ॥ कयांस्तोतृब्भ्युऽआभंर ॥ ७ ॥ इन्द्रोविश्श्वंस्य राजति ॥ शन्नोंऽअस्तुद्विपदेशञ्चतुष्पदे ॥ ८ ॥ शन्नोंमित्रःशंवरुंणःशन्नोंभवत्वर्य्यमा ॥ शन्नऽइन्द्रोबृहस्प्पतिःशन्नोविष्णुंरुरुक्क्रमः ॥ ९ ॥

कर्मउपासनाद्वारा प्राप्त होनेहारे मोक्षमें कल्याणरूप हो । कर्म उपासना संन्यास ज्ञान विज्ञानसे प्राप्त होने-वाले निर्वाणमुक्तिमें कल्याणरूप हो ॥८॥ मित्रदेवता हमारे लिये सुख दो, वरुण कल्याणरूप हो, अर्यमा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमारे निमित्त कल्याणस्वरूप हो, इन्द्र हमारे निमित्त कल्याणरूप हो, बृहस्पति तथा बडे पदन्यासवाले वामनरूप विष्णु हमारे लिये कल्याणस्वरूप हो ॥ ९ ॥ वायु हमको सुख करनेवाला चलो, सूर्य हमारे

शन्नो॒ वातः॑ पवता॒थ्ं शन्न॑स्तपतु॒ सूर्यः॑ ॥ शन्नः॒ कनि॑क्रदद्दे॒वः
प॒र्जन्यो॑ऽअ॒भिव॑र्षतु ॥ १० ॥ अहा॑नि॒ शम्भ॑वन्तु नः॒ शꣳ रात्री॑ः
प्रति॑धीयताम् ॥ शन्न॑ऽइन्द्रा॒ग्नी भ॑वता॒मवो॑भि॒ः शन्न॒ऽइन्द्रा॒
वरु॑णा रा॒तह॑व्या ॥ शन्न॑ऽइन्द्रापू॒षणा॒ वाज॑सातौ॒ शमिन्द्रा॒सो
मा॑ सु॒विता॒य शंयोः॑ ॥ ११ ॥

लिये सुखरूप तपो, शब्दको करता हुआ बादल पर्जन्यदेवता हमारे लिये सुखकारी वर्षा करो ॥ १० ॥ दिन हमारे सुखरूप हों, रात्रियें सुखरूप हों, इन्द्र और अग्निदेवता रक्षा करके हमारे निमित्त सुखरूप हों,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हविसे तृप्त इन्द्र और वरुण देवता हमारे सुखरूप हों, अन्नदानमें इन्द्र और पूषादेवता हमारे सुखरूप हों, इन्द्र और सोमदेवता यजमानके यज्ञके निमित्त सुखरूप हों ॥ ११ ॥ निर्मल प्रकाशमान जल हमारे यज्ञके लिये सुखरूप हो तथा हमारे यजमानके पीनेके निमित्त सुखरूप हो ॥ १२ ॥ हे पृथ्वीदेवी !

शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवंतुपीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ १२ ॥ स्योनापृथिवि नोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानुः शर्म्मसुप्प्रथाः ॥ १३ ॥ आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥ १४ ॥

निष्कण्टक सुखमें स्थितियोग्य विस्तारवाली तुम हमारे लिये सुखरूप हूजिये, हमको शरण दीजिये, परमेश्वर हमारे पापोंको दग्ध करें ॥ १३ ॥ हे जलो ! तुम सुखकारी हो, तुम हमको परम सुन्दर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दर्शनके लिये तथा रसके अनुभवके लिये स्थापन करो ॥ १४ ॥ हे जलो ! तुम्हारा जो शान्तसुखका कारण रस इस कर्म वा लोकमें है हमें उस रसका भागी करो। जिस प्रकार प्रीतियुक्त माता

योवं÷ शिवतंमोरसुस्तस्यंभाजयतेहनं÷॥उशुतीरिंवमातरं÷ ॥
॥ १५ ॥ तस्म्माऽअरंङ्गमामवोयस्युक्षयांयुचिन्नवंथ ॥ आपों
जुनयंथाचनः ॥ १६ ॥

अपना दूधं बालकोंको पिलाती है ॥ १५ ॥ हे जलो ! तुम्हारे उस रसके लिये हम शीघ्र चलें जिस रसके निवासार्थ प्रसन्न होते हो । हे चैतन्यजलो ! तुम हमको संस्कारयुक्त बनाओ ॥ १६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जलाभिमानी देवताओंकी स्तुति प्रतिपादक यह मंत्र है। स्वर्ग अन्तरिक्ष पृथ्वी जल औषधी वनस्पति विश्वेदेवादिक सब देवता विराट् आदि सम्पूर्ण जगत् ब्रह्म हमारे निमित्त सुखरूप हों दैव उपघातोंका

द्यौःशान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवीशान्तिरापःशा
न्तिरोषधयःशान्तिः ॥ वनस्पतयःशान्तिर्विश्वे
देवाःशान्तिर्ब्रह्मशान्तिःसर्वꣳशान्तिःशान्तिरेवशा
न्तिःसामाशान्तिरेधि ॥ १७ ॥

निवारण कर मेरे घरमें सब शान्तिकी वृद्धि करनेवाले हो ॥ १७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे मूर्तिव्यापक परमेश्वर ! तुम मुझे दृढ एकाग्रचित्त करो ब्रह्मापर्यन्त सब प्राणी मुझे मित्रदृष्टिसे देखें, मैंभी सब प्राणियोंको मित्रदृष्टिसे देखूं पुत्र और शिष्यसहित हम सबको मित्रदृष्टिसे देखते हैं, सुवर्णादिक धातुओंको ताड़न या पाषाणके विदारणसे रचित वेदोक्त संस्कारसहित मूर्तियोंको हम सम्बोधन

दृते दृꣳहं मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ॥ मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ॥ मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥ १८ ॥ दृते दृꣳहं मा ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम् ॥ १९ ॥

देते हैं ॥ १८ ॥ हे परमात्मन् ! की मूर्ति तुम मुझको दृढ चित्त करो आपके दर्शन करता हुआ मैं बहुत दिनोंतक जीता रहूं आपके दर्शनसे बहुत कालतक जीता रहूं ॥ १९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे भगवन् ! ऐश्वर्यसम्पन्न तुम्हारे विद्युद्रूपके निमित्त नमस्कार, गर्जितरूपके निमित्त नमस्कार, जिस कारणसे कि समष्टि और व्यष्टि सूर्यरूपके तुम चेष्टा करते हो उस कारण रूपके लिये नमस्कार ॥ २० ॥ हे मूर्तिव्यापक परमेश्वर ! आपके तेजरूपके लिये जो भक्तोंकी भेट ग्रहण करता है नमस्कार, अपनी

नमस्तेहरंसेशोचिषेनमंस्तेऽअस्त्वर्चिषे ॥ अन्याँस्तेऽअस्म्मत्तंपन्तुहेतयं÷पावकोअस्म्मभ्यंÙशिवोभंव ॥ २० ॥ नमंस्तेऽअस्तुविद्युतेनमंस्तेस्तनयित्नवें ॥ नमंस्तेभगवन्नस्तुयतुःस्व÷समीहंसे ॥ २१ ॥

मूर्ति प्रकाश करनेवाले आपके निमित्त नमस्कार, आपके शंखचक्र त्रिशूलादिक आयुध हमसे अन्य अर्थात् मूर्तिपूजनसे विमुख नास्तिकोंको तपाओ पापोंका छुडानेवाले तुम हमारे निमित्त सुखके करने-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाले हो ॥ २१ ॥ हे परमेश्वर ! तुम जिन जिन अवतारोंसे चेष्टा करते हो उसी उसी रूपसे हमें अभय करो, हमारी सन्तानोंको सुख दो, हमारे पशुओंको अभय करो ॥ २२ ॥ हे भगवन् ! हमको औषधी

यतोयतः॑सुमीहसेततोनो॒ऽअभ॑यंकुरु ॥ शन्नः॑कुरुप्र जाभ्योभ॑यन्नः॒पशुभ्यः॑ ॥ २२ ॥ सुमित्रियानु॒ऽआपु ऽओष॑धयः॒सन्तु दुर्म्मित्रियास्तस्म्मैसन्तुयोस्म्मान्द्वे ष्टियञ्चव॒यंद्विष्म्मः ॥ २३ ॥

और जल कल्याण करनेवाले हों और जो हमसे द्रोह करते हैं अथवा हम जिससे द्रोह करते हैं उनको जल और औषधी दुःखदायक हो ॥ २३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वह देवताओंका हित करनेवाला परमेश्वरका चक्षुः सूर्यरूप ब्रह्म पूर्वदिशामें उदय होता है हम उसको पूर्ण आयुपर्यंत देखें, पूर्ण आयुतलक जीवें, पूर्ण आयुपर्यंत भगवान्की कथाओंको सुने, पूर्ण आयुपर्यंत

तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतꣳशृणुयामशरदः शतम्प्रब्रवामशरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात् ॥ २४ ॥ इति रुद्रे शान्त्याऽध्यायः ॥

परमात्माके चरित्रोंका कथन करें, पूर्ण आयुतक अदीन होय, शतवर्षसे ऊपरभी बहुत कालतक जीये ॥ २४ ॥ इति षडंग रुद्रीकी भाषामें शांत्याध्याय समाप्त हुआ ॥ ९ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुद्राध्यायान्तर्गत स्वस्तिवाचनका मंत्राध्याय। बडी कीर्तिवाले इन्द्रदेव हमारे अर्थ नाशरहित शुभको दें और सम्पूर्ण धनोंका स्वामी पूषादेवता हमारे लिये स्वस्तिको दें और नहीं नष्ट हुए हैं चक्रधारा वा

॥ अथ रुद्रे स्वस्तिप्रार्थनेयमन्त्राऽध्यायः ॥ ॥ हरिः ॐ

स्वस्तिनुऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः ॥ स्व
तिनुस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥

पक्ष जिनके ऐसे रथ अथवा गरुडभी हमारे हेतु स्वस्तिको दें तथा देवगुरु बृहस्पतिजीभी हमारे अर्थ कल्याणको दें ॥ १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे अग्निदेव ! तुम पृथ्वीमें रसोंको धारण करो और औषधी तथा अन्नादिकोंकेभी रसोंको दो । इस प्रकार स्वर्ग और अन्तरिक्ष (आकाश) मेंभी रसोंको स्थित करो और मेरे लिये दिशा और विदिशा (कोण) रसयुक्त हों । यह मेरी आपसे प्रार्थना है ॥ २ ॥ हे दर्भरूपी विष्णुभगवन् ! तुम हविर्धान मण्डपके

ॐ पयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ॥
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥ ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि ॥
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ ३ ॥

ललाट स्थान हो । हे रराटचन्तो ! दोनों तुम विष्णुनामवाले हविर्धानमण्डपके ओष्ठोंकी सन्धिरूप हो ! हे बृहत्सूची ! तुम विष्णुनामवाले हविर्धानमण्डपकी सूची हो । हे रज्जुग्रन्थिस्वरूप ! तुम विष्णुरूप हविर्धा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमण्डपकी ध्रुव नामक ग्रन्थी हो। हे हविर्धान! विष्णुसम्बन्धी होनेसे मैं तुम्हारा स्पर्श करता हूं और स्तुति करता हूं ॥ ३ ॥ हे हविर्धान! मैं तुम्हें अग्नि, वायु, सूर्य, चन्द्रमा, अष्ट वसु, ग्यारह रुद्र, बारह

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता ॥ रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता ॥ ४ ॥

आदित्य, उनंचास पवन, तेरह विश्वेदेवा और बृहस्पति, इन्द्र तथा वरुण इत्यादि देवताओंके स्वरूप होनेके कारण स्पर्श करता हूं और तुम्हारी स्तुतिभी करता हूं ॥ ४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सद्योजात स्वरूप श्रीमहादेवजीकी मैं शरणमें प्राप्त होता हूं। सद्योजातरूप रुद्रको नमस्कार है, संसारसे पार करनेवाले भवरूप महादेव मुझको संसारसे उद्धार करें मैं नमस्कार करता हूं॥ ५॥

ॐ स॒द्योजा॒तं प्रप॑द्यामि स॒द्योजा॒ताय॒ वै नमो॒ नमः॑ ॥ भ॒वे भ॑वे॒ नाति॑ भवे भवस्व॒ मां भ॒वोद्भ॑वाय॒ नमः॑ ॥ ५ ॥ वा॒म॒दे॒वाय॒ नमो॑ ज्ये॒ष्ठाय॒ नमः॑ श्रे॒ष्ठाय॒ नमो॑ रु॒द्राय॒ नम॒ः ॥ काला॑य॒ नम॒ः कल॑विकरणाय॒ नमो॒ बल॑विकरणाय॒ नमो॒ ॥ ६ ॥

वामदेवके निमित्त और ज्येष्ठ श्रेष्ठ रुद्रदेवको नमस्कार कालको और बलविकरण करनेवाले रुद्रदेव श्रीशंकरको नमस्कार है॥ ६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बलरूप और बलप्रमथन करनेवाले महादेवको नमस्कार है, समस्त प्राणियोंको दमन करनेवाले, मनको उन्मन करनेवाले श्रीशंकरको नमस्कार है ॥७॥ अघोर रूपवाले और घोररूपवालोंको नमस्कार है तथा

बलायनमोबलप्रमथनायनमः ॥ सर्वभूतदमनायनमोमनोन्मनायनमः ॥ ७ ॥ अघोरेभ्योथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेअस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥८॥ तत्पुरुषाय विद्महेमहादेवायधीमहि ॥ तन्नोरुद्रःप्रचोदयात् ॥ ९ ॥

घोर घोरतरोंको सर्व और सर्वरूप सबमें व्यापक रुद्रस्वरूप महादेवको नमस्कार है ॥ ८ ॥ हम तत्पुरुषरूप महादेवका तत्व जानकर ध्यान करते हैं और वेही महादेव हमारी बुद्धियोंको प्रेरणा करते हैं ॥९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सम्पूर्ण विद्याओंके रचयिता, समस्त प्राणियोंके प्रति अधिपति ब्रह्मा, शिव, सदाशिव तथा ओंकारस्वरूप श्रीशंकर हमारा कल्याण करे ॥ १० ॥ हे क्षुराभिमानी देवता ! तुम कल्याणरूप नामवाले हो,

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ १० ॥ ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिंसीः ॥ निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय ॥ ११ ॥

नामसे शान्त हो वज्र तुम्हारा पिता है, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूं । तुम मेरी रक्षा करो । हे यजमान ! मैं तुम्हें जीवनके निमित्त अन्न भक्षण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

करनेको, सन्तानकी उत्पत्तिको और धनकी पुष्टिका शुभ सन्तानके निमित्त एवं उत्तम सामर्थ्यके निमित्त मुण्डन अथवा पवित्र करता हूं ॥ ११ ॥ हे अन्तर्यामी सूर्य ! तुम मेरे सम्पूर्ण पापोंको दूर

ॐ व्विश्श्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ॥ यद्भद्रन्तन्नऽआ
सुव ॥ १२ ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशा
न्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्वि
श्श्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः
सामाशान्तिरेधि ॥ १३ ॥

करो और जो कुछ मेरे लिये कल्याणकारी एवं हितकारी हो वह हमें दो ॥ १२ ॥ स्वर्गसम्बन्धी जो

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शान्ति, आकाशसम्बन्धी जो शान्ति, एवं पृथिवी जल औषधि और वृक्षोंसम्बन्धी जो शान्ति है तथा समस्त देवगणसम्बन्धी जे शान्तियें हैं, हे गणेशदेव! वेही सब शान्तियें आपकी कृपासे हमें प्राप्त हों ॥ १३ ॥ शान्ति, शान्ति, सुशान्ति हो संपूर्ण अरिष्टोंकी शान्ति हो। इस रुद्राभिषेकरूप शुभकर्मका

ॐशान्तिःशान्तिःसुशान्तिर्भवतुसर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥ अनेनरुद्राभिषेककर्मणाकृतेनतेनश्रीभवानीशंकरमहारुद्रः प्रीयतां नमम ॥ ॐसदाशिवार्पणमस्तु ॥ ॥ इतिस्वस्तिप्रार्थनेयमन्त्राऽध्यायः ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥

अनुष्ठान करनेसे श्रीमती पार्वती और रुद्रस्वरूप श्रीमहादेवजी हमारे ऊपर प्रसन्न हों ॥ इति श्रीमुरादाबादनिवासिव्रजरत्नभट्टाचार्यकृतशुक्लयजुर्वेदीय (षडंग) रुद्राष्टाध्यायीभाषाटीकायां मंत्राध्यायः सम्पूर्णः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वैदिकग्रन्थाः

१ अष्टादशोपनिषद् गुटका [अठारहों उपनिषद्
पाठ करने योग्य] .... खेम १–० ०–२
२ ऋग्वेदसंहिता .... मुं ३–८ ० ६
३ दण्डक शुक्ल यजुर्वेदी.... .... क ०–४ ०–॥
४ पारस्कराचार्यकृतगृह्यसूत्र हरिहर भाष्य खे १–८ ०–३
५ पुरुषसूक्तश्रीसूक्त .... क ०–१॥ ०–॥
६ पुरुषसूक्त भा० टी०.... .... क ०–२ ०–॥
७ पितृसंहिता .... क ०–१॥ ०–॥
८ मन्त्रसंहिता शुक्ल यजुर्वेदी .... क ०–६ ०–१
९ यजुर्वेदसंहिता (वाजिसनेयी सर्वानुक्रमणिका
याज्ञवल्क्य शिक्षा व स्वरसहित मोटे टैपमें
शुद्धतापूर्वक उत्तम छपी है .... क ३–० ०–६
१० यजुर्वेदसंहिता भाषाटीका .... खे ८–० ०–१२
११ रुद्री शुक्ल यजुर्वेदी .... क ०–३ ०–१
१२ रुद्री भाषाटीका .... क ०–९ ०–२

वेदान्तग्रन्थाः ।

१३ श्रीरामगीता भाषाटीका पदप्रकाशिका
अनुवाद और विषमपदी सहित .... क ०–८ ०–१
१४ अष्टावक्रगीता सान्वय भाषाटीका .... खे १–० ०–२
१५ आत्मबोध, तत्त्वबोध, वेदस्तुतिभाषा .... (१)०–४ ०–॥
१६ आनन्दामृतवर्षिणी वेदान्त (आनन्दगिरिजीप्र-
णीत-गीताके कठिन स्थलोंका भाव प्रतिपादन है) खे ०–१२ ०–२
१७ आत्मबोध भाषाटीका .... क ०–४ ०–॥
१८ अद्वैतसुधा–संस्कृत सुगम अपूर्व आजतक
कहींभी न छपा वेदांत ग्रंथ मुमुक्षु लोगोंको
अत्यादरणीय है .... क ०–१२ ०–२
१९ कैवल्योपनिषद् संस्कृत .... क ०–१ ०–॥
२० गीताचिद्घनानन्दस्वामिकृत गूढार्थदीपिका मूल
अन्वय पदच्छेदसहित भाषाटीका .... (१) ७–० १–०
२१ गीताश्लोकार्थदीपिका अतिउत्तम टिप्पणी-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सहित तैयार है गीता वाक्यार्थबोधिनी और
गीता अमृततरंगिणीसेही अच्छी बनीहै. क १-४ ०-३
२२ गीता भा० टी० पाकेटबुक .... क ०-८ ०-१॥
२३ गीता आनन्दगिरीकृत भाषाटीकासह .... क २-८ ०-६
२४ गीता भाषाटीका अन्वय दोहासहितउत्तम क१-४ ०-३
२५ गीता भाषाटीका १२ पेजी .... क ०-१४ ०-२
२६गीतामृततरंगिणी भाषाटीका(रघुनाथप्रसादकृत) क १-० ०-२
२७ गीतामृततरंगिणी भाषाटीका पाकिटबुक (१) ०-१२ ०-१॥
२८ गीतापंचदश भाषाटीका-[काश्यपगीता, शौनक
गीता, अष्टावक्रगीता, नहुषगीता, सरस्वतीगीता,
युद्धिष्ठिरगीता, बकगीता, धर्मव्याधगीता, श्री-
कृष्णगीतादि] .... खे ०-१२ ०-१॥
२९ गीता पञ्चरत्न अक्षरमोटा गुटका
रेशमी अतिउत्तम ७ पंक्ती .... क १-४ ०-३
३० गीता श्रीधरीटीकासहित .... (१) १-० ०-३
३१ गीता बडे अक्षरकी १६ पेजी गु. .... क ०-१४ ०-२

३२ गीता बडे अक्षरकी ६पंक्ती विष्णुसाहित खुली क०-१४ ०-२
३३ गीता पंचरत्न अत्यंत बडे अक्षर खुलापत्राक २-० ०-४
३४ गीता अत्यंत बडे अक्षरकी खुलापत्रा .... क १-४ ०-३
३५ गीता गुटका विष्णुसहस्रनामसहित क ०-८ ०-१
३६ " पञ्चरत्न और एकादशरत्न .... क ०-१२ ०-२
३७ " पञ्चरत्न द्वादशरत्न .... क ०-९ ०-१॥
३८ ,, पञ्चरत्न नवरत्न पाकिट बुक .... क ०-७ ०-१
३९ गीता पञ्चरत्न सप्तरत्न बुकूफेसन .... (१) ०-१२ ०-२
४० गीता पंचरत्न भाषाटीका साहित बडा क १-८ ०-४
४१ गीता गुटका पाकिट बुक ६४ पेजी .... क ०-५ ०-१
४२ गीता पंचरत्न गुटका भा० टी० .... क १-० ०-२
४३ गणेशगीता भाषाटीकासहित .... खे ०-६ ०-१
४४ गोरखनाथपद्धति भाषाटीका (योगसाधन) क ०-१२ ०-१॥

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना–गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना, कल्याण–मुंबई.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection